सिल्सिलए फ़ैज़ाने अ़-श-रए मुबश्शरह के आठवें सहाबी

Hazrate Sayyiduna Saa'd Bin Abi Waqqas (Hindi)

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضي الله عنه



- खुश बख़्त मक्की नौ जवान
- प्यारे आक़ा पर हज़ारों जानें कुरबान
- राहे ख़ुदा में सब से पहला तीर
- इश्क़ से मा'मूर वसिय्यत
- बहरे ज़ुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हम ने
- दुआ की क़बूलिय्यत का नुस्ख़ा
- खुश बख़्ती और बद बख़्ती वाली तीन तीन चीज़ें

المدينة العلمية (دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) । (تاريخ دمشق لابن عساكر ج٥١ ص١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह किताब **"हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ**"** मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का खुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **"हुरूफ़ की पहचान"** नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت، اِسْتِعْمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

ફ = پھ	પ = پ	ભ = بھ	બ = ب	અ = ا
સ = ث	ઠ = ٹھ	ટ = ٹ	થ = تھ	ત = ت
હ = ح	છ = چھ	ચ = چ	ઝ = جھ	જ = ج
ઢ = ڈھ	ડ = ڈ	ધ = دھ	દ = د	ખ = خ
ઝ = ز	ઢ = ڑھ	ડ = ڑ	ર = ر	ઝ = ذ
ઝ = ض	સ = ص	શ = ش	સ = س	ઝ = ژ
ફ = ف	ગ = غ	અ = ع	ઝ = ظ	ત = ط
ઘ = گھ	ગ = گ	ખ = کھ	ક = ک	ક = ق
હ = ھ	વ = و	ન = ن	મ = م	લ = ل
ઈ = ای / ئی	ઈ = اِ	ઐ = ـے ا	એ = ے	ય = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 ´ E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

नाम किताब : **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ**

पेशकश : शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

सिने तबाअ़त : रबीउ़ल आख़िर 1437 सि.हि.

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद**

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाखें

बरेली शरीफ़ : दरगाह आ'ला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यू.पी। फ़ोन : 09313895994

गुलबर्गा शरीफ़ : फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तीमा पूर चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक। फ़ोन : 09241277503

बनारस : अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तक्या, मदन पूरा, बनारस, यूपी। फ़ोन : 09369023101

कानपूर : मस्जिद मख़्दूम सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिप्टी पड़ाव चौराहा, कानपूर, यूपी। फ़ोन : 09619214045

कलकत्ता : 35A/H/2, मोमिन पूर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल। फ़ोन : 033-32615212

अनन्त नाग : म-दनी तरबिय्यत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनन्त नाग, कश्मीर। फ़ोन : 09797977438

सूरत : वलिया भाई मस्जिद, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सूरत, गुजरात। फ़ोन : 09601267861

इन्दौर : 13, बॉम्बे बाज़ार, उदापूरा, इन्दौर, एमपी। फ़ोन : 09303230692

बंगलोर : 13, ह़ज़रत बिलाल कॉम्पलेक्स, नवां मेन पल्लाना गार्डन, अ़रबिक कॉलेज, बंगलोर, कर्नाटक। फ़ोन : 09343268414

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

बा कमाल फ़िरिश्ता :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मश्हूरे ज़माना किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 177 पर है : सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करते हुए यूं कहता है : फुलां बिन फुलां ने आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ा है।[1]

मैं कुरबां इस अदाए दस्त गीरी पर मेरे आक़ा
मदद को आ गए जब भी पुकारा या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

[1]...... مجمع الزوائد، الحدیث: ۱۷۲۹۱، ج۱۰، ص ۲۵۱

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाला किस क़दर बख़्त वर है कि उस का नाम बमअ़ वल्दिय्यत बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में पेश किया जाता है । यहां येह नुक्ता भी इन्तिहाई ईमान अफ़रोज़ है कि क़ब्रे मुनव्वर عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ह़ाज़िर फ़िरिश्ते को इस क़दर ज़ियादा क़ुव्वते समाअ़त दी गई है कि वोह दुन्या के कोने कोने में एक ही वक़्त के अन्दर **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाले लाखों मुसल्मानों की इन्तिहाई धीमी आवाज़ भी सुन लेता है और उसे **इ़ल्मे ग़ैब** भी अ़त़ा किया गया है कि वोह **दुरूदे पाक** पढ़ने वालों के नाम बल्कि उन के **वालिद साहि़बान** तक के नाम जान लेता है । जब ख़ादिमे दरबारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **क़ुव्वते समाअ़त** और **इ़ल्मे ग़ैब** का येह ह़ाल है तो सरकारे वाला तबार, मक्के मदीने के ताजदार, मह़बूबे परवर दगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **इख़्तियारात व इ़ल्मे ग़ैब** की क्या शान होगी ! वोह क्यूं न अपने ग़ुलामों को पहचानेंगे और क्यूं न उन की फ़रियाद सुन कर **बि इज़्निल्लाहि तआ़ला** इमदाद फ़रमाएंगे ।[1]

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमत गारों की सरदार का आ़लम क्या होगा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ुश बख़्त मक्की नौ जवान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शान निराली है कि अबू जह्ल ब ज़ाहिर

1...... फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब आदामे त़आ़म, जि. 1, स. 177

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब रह कर और मुख़्तलिफ़ मो'जिज़ात देख कर भी दौलते इस्लाम से मह़रूम रहा जब कि ह़ज़रते उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ाहिरी सोह़बत से कोसों दूर उ़म्र भर ज़ियारत के लिये रन्जूर रहे मगर ख़ुश बख़्ती का येह आ़लम कि कल क़ियामत में मुसल्मानों की एक बहुत बड़ी ता'दाद इन की शफ़ाअ़त के सदक़े बख़्शी जाएगी ।[1]

तक़्दीरे इलाही जब किसी पर मेह्रबान होती है तो उस की हिदायत व नजात के लिये ज़ाहिरी अस्बाब के साथ साथ बसा अवक़ात बातिनी अस्बाब भी पैदा कर दिये जाते हैं, इस का मुशा–हदा एक **मक्की नौ जवान** की ज़बान से उस के क़बूले इस्लाम के इस दिलचस्प वाक़िए़ से कीजिये : "इस्लाम लाने से तीन दिन पहले मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरे चारों त़रफ़ घुप अंधेरा छाया हुवा है, उस गहरी तारीकी में कुछ दिखाई दे रहा था न सुझाई और न ही उस अंधेरे से जान छुड़ाने के लिये कुछ समझ में आ रहा था कि कहां और किधर जाऊं ? अचानक मेरे सामने एक चांद नुमूदार हुवा तो मैं उस की जानिब चल दिया तो क्या देखता हूं कि मुझ से पहले चन्द आदमी उस चांद तक पहुंच चुके हैं, ज़रा क़रीब पहुंचा तो मा'लूम हुवा कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू त़ालिब और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم हैं । मैं ने उन से पूछा : आप यहां कब पहुंचे ? तो उन्हों ने बताया कि बस अभी अभी आए हैं ।"

---

[1]......فیض القدیر، ج۵، ص ۴۴۹

इस ख़्वाब के तीन दिन बा'द मुझे मा'लूम हुवा कि **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चुपके चुपके इस्लाम की दा'वत दे रहे हैं तो मैं समझ गया कि येही वोह चांद है जो मुझे कुफ़्र की तारीकियों से छुटकारा दिलाने वाला है। पस मैं रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तलाश में निकल खड़ा हुवा, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त "अज्याद" नामी मक़ाम पर तशरीफ़ फ़रमा थे। मैं ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ की : आप किस चीज़ की दा'वत देते हैं ? तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम इस बात की गवाही दो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं। तो मैं ने फ़ौरन कहा : "मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और इस बात की भी गवाही देता हूं कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।"[1]

येह ख़ुश बख़्त मक्की नौ जवान कौन था ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन कुफ़्रो शिर्क की तारीक वादी से निकल कर दीने इस्लाम की पुरनूर वादी में दाख़िल हो जाना ज़ाहिरी व बातिनी मे'राज है, उस मक्की नौ जवान की ख़ुश क़िस्मती के क्या कहने ! ख़ुद दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें कलिमए शहादत पढ़ा कर दीने इस्लाम के महकते बाग़ में दाख़िल

---

[1] ......الریاض النضرۃ، الباب الثامن فی مناقب سعد بن مالک، الفصل الرابع فی اسلامہ، ج ۲، ص ۳۲۰ ملتقطاً

फ़रमाया, इस नौ जवान की क़िस्मत पर यक़ीनन सभी को रश्क आ रहा होगा, बल्कि इस खुश नसीब नौ जवान के तआ़रुफ़ के लिये दिल भी मचल रहा होगा कि आख़िर येह खुश नसीब नौ जवान कौन है तो जान लीजिये कि येह फ़ातेहे ईरान जन्नती सहा़बी "**हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ" हैं।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का तआ़रुफ़ :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह खुश नसीब सहा़बी हैं, जिन का तआ़रुफ़ खुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने करवाया। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रही़म صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस्तिफ़्सार किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं कौन हूं ? इर्शाद फ़रमाया : "तुम सा'द बिन मालिक बिन उहैब बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन जुहरा हो और जो इस के इ़लावा कोई और नसब तुम्हारी त़रफ़ मन्सूब करे उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो।"[1]

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत अबू इस्हा़क़ जब कि ज़मानए जाहिलिय्यत और ज़मानए इस्लाम दोनों में आप का नाम "**सा'द**" ही रहा है, "**अबू वक़्क़ास**" आप के वालिद **मालिक बिन उहैब** की कुन्यत है। इसी वज्ह से आप "**सा'द बिन मालिक**" और "**सा'द बिन अबी वक़्क़ास**" दोनों

---

[1]......المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب ذکر مناقب ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۶۱۴۶، ج ۴، ص ۶۲۹

नामों से मशहूर हैं, आप का नसब पांचवीं पुश्त में **किलाब बिन मुर्रह** पर जा कर रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक नसब से जा मिलता है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه की वालिदा **ह़म्ना बिन्ते सुफ़्यान बिन उमय्या बिन अ़ब्दे शम्स बिन अ़ब्दे मनाफ़ हैं।**[1]

सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़ज़ीम निस्बत :

ह़ज़रते सय्यिदुना **जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक मर्तबा **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी अक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अक़्दस में ह़ाज़िर हुए तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें देख कर इर्शाद फ़रमाया : **''येह मेरे मामूं हैं अगर किसी का ऐसा मामूं हो तो दिखाए।''**[2]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि ऐसा शानदार मामूं किसी को नहीं मिला जैसा मामूं **अल्लाह** ने मुझे दिया है येह ह़ज़रते सा'द की इन्तिहाई अ़-ज़मत है। मज़ीद फ़रमाते हैं कि तुम ने देख लिया कि मैं अपने मामूं सा'द का कैसा अ-दबो एह़तिराम करता हूं, तुम लोग भी अपने नाना मामूओं का इसी त़रह़ अ-दबो एह़तिराम किया करो।[3]

---

[1]...... تاریخ مدینہ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ۲۰ ص ۲۹۳

الریاض النضرۃ، الفصل الثانی فی اسمہ، ج ۲، ص ۳۱۹

[2]...... سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، باب مناقب ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص،

الحدیث: ۳۷۷۳، ج ۵، ص ۴۱۸

[3]...... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 442

मामूं कहने की वज्ह :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन ईसा तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی (अल मु-तवफ़्फ़ा 279 हि.) इस ह़दीसे पाक को ज़िक्र करने के बा'द इर्शाद फ़रमाते हैं कि "**हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعالٰی عَنْہ बनू ज़ुहरा ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखते थे और सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा भी इसी ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखती थीं, इसी लिये सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें अपना मामूं इर्शाद फ़रमाया।"[1]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त इर्शाद फ़रमाते हैं : "ज़ुहरा ज़ौजा हैं किलाब बिन का'ब बिन लुवी बिन ग़ालिब की, जनाबे सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللہُ تَعالٰی عَنْہا हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिल जाती हैं किलाब में और ज़ुहरा की औलाद में **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعالٰی عَنْہ भी हैं, इस त़रह़ ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللہُ تَعالٰی عَنْہ जनाबे सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللہُ تَعالٰی عَنْہا के ख़ानदान से हुए और मां का सारा ख़ानदान ख़्वाह दादा की त़रफ़ से हो या नाना की त़रफ़ से अपने नाना मामूं होते हैं। ख़याल रहे कि ह़ज़रते सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللہُ تَعالٰی عَنْہا की दधियाल मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में है और ननिहाल मदीनए त़य्यिबा में इस निस्बत से अन्सारे मदीना भी हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाना मामूं हैं और इधर **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعالٰی عَنْہ भी।[2]

[1] ......سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، مناقب ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص، ج۵، ص۴۱۸

[2] ......मिरआतुल मनाजीह, जि. 8, स. 442

आप का हुल्यए मुबारक :

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़द छोटा होने के बा वुजूद एक बा रो'ब शख़्सिय्यत के मालिक थे, मज़्बूत जिस्म और ऊंचा सर आप के मुदब्बिर होने की ग़म्माज़ी करता था, मोटी उंग्लियां, चपटी नाक और जिस्म अश्अ़रुल जसद या'नी बहुत बालों वाला था, सर के बाल निहायत ख़ूब सूरत और घुंघर्याले थे, जंग के मौक़अ़ पर आप सियाह ख़िज़ाब[1] भी लगाते थे ताकि कुफ़्फ़ार पर रो'ब व दबदबा बैठ जाए ।[2]

कब इस्लाम क़बूल फ़रमाया ?

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार भी उन सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन्हों ने सब से पहले इस्लाम क़बूल फ़रमाया । जब आप इस्लाम लाए उस वक़्त आप की उ़म्र सत्तरह या उन्नीस साल थी और नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत का हुक्म अभी तक नाज़िल न हुवा था । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कितने

1...... जंग के इलावा सियाह ख़िज़ाब लगाना मन्अ़ है जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 1250 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" जिल्द सिवुम सफ़्हा 597 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मर्द को दाढ़ी और सर वग़ैरा के बालों में ख़िज़ाब लगाना जाइज़ बल्कि मुस्तहब है मगर सियाह ख़िज़ाब लगाना मन्अ़ है हां मुजाहिद को सियाह ख़िज़ाब भी जाइज़ है कि दुश्मन की नज़र में इस की वज्ह से हैबत बैठेगी ।

2......الرياض النضرة فی مناقب العشرة، الباب الثامن فی مناقب سعد بن مالک، ج ٢، ص ٣٢٠

تاريخ مدينة دمشق، حرف السين، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ٢٠، ص ٢٩٣

लोगों के बा'द ईमान लाए इस के मु-तअ़ल्लिक़ दो क़ौल मरवी हैं : (1) तीसरे नम्बर पर ईमान लाए और क़बूले इस्लाम के बा'द बारगाहे रिसालत में सात दिन तक रुके रहे। (2) सातवें नम्बर पर ईमान लाए और क़बूले इस्लाम के बा'द बारगाहे रिसालत में नव दिन तक रुके रहे। अलबत्ता ! जिस दिन आप इस्लाम लाए उस दिन और कोई इस्लाम न लाया।[1]

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाइयों का क़बूले इस्लाम :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम लाने के बा'द आप के दो सगे भाई हज़रते सय्यिदुना आ़मिर और हज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और एक अ़ल्लाती (या'नी बाप शरीक) बहन हज़रते सय्यि-दतुना ख़ालिदा बिन्ते अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी ईमान ले आईं।[2] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक और बाप शरीक भाई उ़त्बा बिन अबी वक़्क़ास भी है जिस ने ग़ज़्वए उहुद में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दन्दाने मुबा-रका को शहीद किया था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे बद-दुआ़ दी थी कि एक साल के अन्दर अन्दर कुफ़्र पर मर जाए और ऐसा ही हुवा। इसी वज्ह से जुम्हूर के नज़्दीक इस का मुसल्मान होना साबित नहीं।[3]

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई हज़रते सय्यिदुना आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़बशा और मदीना

---

[1] ......صحیح البخاری، کتاب الفضائل، باب مناقب سعد بن ابی وقاص، الحدیث:۳۷۲۷، ج۲، ص۵۴۱

[2] ......الریاض النضرة، سعد بن ابی وقاص، ج۲، ص۳۲۱

[3] ......معرفة الصحابة لابی نعیم، باب من اسمه عتبه، الحدیث:۵۳۸۵، ج۳، ص۴۹۸

दोनों हिजरतों की सआदत हासिल की, येह जय्यिद आलिम थे और इन का शुमार उन खुश नसीबों में होता है जिन्हें मुबश्शर सहाबा कहा जाता है, या'नी वोह सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जिन्हें इसी दुन्या में सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह से जन्नत की खुश ख़बरी मिली। चुनान्चे,

जन्नती शख़्स की आमद :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन इर्शाद फ़रमाया : "**अभी एक जन्नती शख़्स तुम्हारे पास आएगा।**" येह फ़रमाना था कि मेरे भाई हज़रते सय्यिदुना आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए।[1]

नौ उम्र मुजाहिद और जज़्बए जिहाद !

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दूसरे भाई हज़रते सय्यिदुना उमैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी इन्तिहाई खुश बख़्त सहाबी थे जिन्हों ने ग़ज़्वए बद्र में जामे शहादत नोश फ़रमाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जज़्बए जिहाद के क्या कहने ! ग़ज़्वए बद्र में इन की शिर्कत का वाक़िआ निहायत दिलचस्प है। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ 33 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले, "**नूर का खिलोना**" सफ़हा 22 पर है कि **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास**

---

[1] ......الریاض النضرۃ، سعد بن ابی وقاص، ج ۲، ص ۳۲۱

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के छोटे भाई **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो अभी नौ उ़म्र ही थे ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर फ़ौज की तय्यारी के वक़्त इधर उधर छुपते फिर रहे थे। **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने तअ़ज्जुब से पूछा : क्यूं छुपते फिर रहे हो ? कहने लगे, कहीं ऐसा न हो कि मुझे सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم देख लें और बच्चा समझ कर जिहाद पर जाने से मन्अ़ फ़रमा दें। भय्या ! मुझे राहे ख़ुदा में लड़ने का बड़ा शौक़ है। काश ! मुझे शहादत नसीब हो जाए। आख़िर कार सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तवज्जोह में आ ही गए और उन को कम उ़म्री की वज्ह से मन्अ़ फ़रमा दिया। **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़-ल-बए शौक़ के सबब रोने लगे, उन का आरज़ूए शहादत में रोना काम आ गया और ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी। जंग में शरीक हो गए और दूसरी आरज़ू भी पूरी हो गई कि उसी जंग में शहादत की सआ़दत भी नसीब हो गई।[1]

छोटा मुजाहिद बड़ी तलवार :

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं मेरे भाई **ह़ज़रते उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उ़म्र में छोटे थे और तलवार बड़ी थी लिहाज़ा मैं उन की ह़माइल के तस्मों में गिरहें लगा कर ऊंची करता था ताकि वोह थोड़े बड़े नज़र आएं।[2]

---

[1] ......الاصابة، الرقم ۶۰۷۲ عمیر بن ابی وقاص، ج ۴، ص ۶۰۳

[2] ......تاریخ مدینہ دمشق، سعد بن ابی وقاص، ج ۲۰، ص ۲۹۸

ज़िन्दगी का ह़क़ीक़ी मक़्सद :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! छोटा हो या बड़ा राहे खुदा में जान कुरबान करना ही सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ज़िन्दगी का हक़ीक़ी मक़्सद था। लिहाज़ा काम्याबी खुद आगे बढ़ कर उन के क़दम चूमती थी। हज़रते सय्यिदुना उमैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का जज़्बए जिहाद और शौके शहादत आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया और बड़े भाई सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के तआवुन के बारे में भी आप ने पढ़ा। बेशक आज भी बड़ा भाई अपने छोटे भाई से और बाप अपने बेटे से तआवुन करता है मगर सिर्फ़ दुन्यवी मुआ-मलात में और फ़क़त दुन्यवी मुस्तक़्बिल को रोशन करने की ग़रज़ से। अफ़्सोस ! हमारे पेशे नज़र सिर्फ़ दुन्या की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी का सिंघार जब कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की निगाहों में आख़िरत की ज़िन्दगी की बहार थी। हम दुन्यवी आसाइशों पर निसार रहते हैं और वोह उख़्रवी राह़तों के त़लब गार रहते। हम दुन्या की ख़ात़िर हर त़रह़ की मुसीबतें झेलने के लिये तय्यार रहते हैं और वोह आख़िरत में सुर्ख़-रूई के लिये हर त़रह़ की राह़ते दुन्या को ठोकर मार कर सख़्त मसाइबो आलाम और ख़ून आशाम तलवारों तले भी मुस्कुराते रहते।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का इश्क़े रसूल :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम की दौलत से मालामाल होने के बा'द इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के दिलों की धड़कन बन चुका था, अपने महबूब आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत व गुलामी में इतने मुन्हमिक और मुस्तग़रक़ हो चुके थे कि उन्हें दुन्या की किसी चीज़ और किसी निस्बत से कोई ग़रज़ न थी। वोह सब कुछ बरदाश्त कर सकते थे लेकिन उन्हें कभी येह गवारा न था कि कोई इन के दिलों के चैन, रहमते कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन से जुदा करे क्यूं कि महबूब का इश्क़ अगर पूरे तौर पर दिल में जा गुज़ीं हो तो महबूब की जुदाई जिस्म से जान की जुदाई का सबब बन जाती है। अहकामे इलाही की ता'मील और सीरते न-बवी की पैरवी आशिक़ के रगो पै में समा जाती है। दिलो दिमाग़ और जिस्मो रूह पर किताबो सुन्नत की हुकूमत क़ाइम हो जाती है। आख़िरत निखरती है, तहज़ीब व सक़ाफ़त के जल्वे बिखरते हैं और बे मायह इन्सान में वोह कुव्वत रूनुमा होती है जिस से जहां बीनी व जहां बानी के जौहर खुलते हैं। आलम की हर चीज़ उस से इश्क़ करने लगती है बल्कि खुद इश्क़ उस से यूं गोया होता है :

की मुहम्मद से वफ़ा तू ने तो हम तेरे हैं
येह जहां चीज़ है क्या लौहो क़लम तेरे हैं

इसी इश्क़े कामिल के तुफ़ैल सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को

दुन्या में इख़्तियार व इक़्तिदार और आख़िरत में इ़ज़्ज़तो वक़ार मिला, येह उन के इ़श्क़ की इन्तिहा थी कि मुश्किल से मुश्किल घड़ी, और कठिन से कठिन वक़्त में भी उन्हें दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत से ज़र्रा बराबर दूरी गवारा न थी। वोह हर मर्ह़ले में अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नक़्शे पा ढूंडते और उसी को मश्अ़ले राह बना कर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते यहां तक कि दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाते हुए भी इ़श्क़े मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़सीन वादियों में खोए रहे गोया :

लह़द में इ़श्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले

अंधेरी रात सुनी थी चराग़ ले के चले

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के इ़श्क़े रसूल का एक अनोखा वाक़िआ़ पढ़िये और इ़श्क़े मह़बूब के जल्वों में गुम हो जाइये। चुनान्चे,

प्यारे आक़ा पर हज़ारों जानें क़ुरबान :

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ अपनी मां के बड़े फ़रमां बरदार थे। हर हुक्म पर सरे तस्लीम ख़म कर देते और कभी अपनी मां की ना फ़रमानी न की। जब ईमान की दौलत से मालामाल हुए और **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुलामी में आ गए तो उन की मां बेताब हो गई, उस का दिल बेचैन हो गया, बेटे को आबाओ अज्दाद के दीन

से फिरते देख कर ग़मगीन दिल उछल कर ह़ल्क़ में आ गया और बे साख़्ता पुकार उठी : **"ऐ मेरे लाल ! ऐ मेरे जिगर के टुकड़े ! ऐ मेरे फ़रमां बरदार बेटे ! येह तू ने क्या किया ? तू ने अपने बाप दादा के दीन को छोड़ दिया ? ऐ मेरे बेटे ! तू ने आज तक कभी मेरी बात को टाला न कभी मेरी ना फ़रमानी की ! यक़ीनन तू मेरी येह बात भी मानेगा और इस्लाम छोड़ देगा, अगर तू ने ऐसा न किया तो मैं खाऊंगी न पियूंगी, सूख कर मर जाऊंगी और येह सब कुछ तेरे सबब से होगा और मेरे ख़ून का वबाल तुझ पर होगा और लोग तुझे मां का क़ातिल कह कर पुकारा करेंगे ।"** येह कह कर वाक़ेई उस ने खाना पीना छोड़ दिया, धूप में बैठ गई, और कुछ न खाने पीने की वज्ह से बहुत कमज़ोर हो गई ।

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! कुरबान जाइये **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضی اللہ تعالٰی عنہ के इश्क़े रसूल पर, वालिदा की येह ह़ालत देख कर भी आप पर कोई असर न हुवा, वालिदा का येह दर्दनाक अन्दाज़ आप की इस्तिक़ामत को मु-त-ज़लज़ल न कर सका क्यूं कि मुआ़-मला दीने इस्लाम और मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इश्क़ का था अगर कोई दुन्यावी मुआ़-मला होता तो येही **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضی اللہ تعالٰی عنہ शायद आगे बढ़ कर मां के क़दमों से लिपट जाते और वालिदा की उस बात पर भी सरे तस्लीम ख़म कर देते लेकिन प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और प्यारी सोह़बत का मुआ़-मला था और आप को किसी भी त़रह़ अपने मह़बूब की

जुदाई बरदाश्त न थी। चुनान्चे आप ने अपनी वालिदा के इस अन्दाज़ पर जिन अल्फ़ाज़ में जवाब दिया वोह ता क़ियामे क़ियामत उ़श्शाक़ के लिये मश्अ़ले राह बना रहेगा बल्कि उसे तारीख़ में सुनहरी हुरूफ़ से लिखा जाता रहेगा, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इ़श्क़ो मह़ब्बत से भरपूर अन्दाज़ में गोया यूं फ़रमाया : **"ऐ मेरी मां ! वाक़ेई अगर कोई दुन्यावी मुआ़-मला होता तो मैं हरगिज़ तेरी ना फ़रमानी न करता मगर येह मुआ़-मला तो मेरे उस मह़बूब का है जो तुझ से करोड़ों गुना बढ़ कर मुझ से मह़ब्बत फ़रमाता है, ऐ मां ! येह उस ज़ाते अक़्दस का मुआ़-मला है जो रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन है, शफ़ीउ़ल मज़्निबीन है, राह़तुल आ़शिक़ीन है, जिस की जुदाई के मुक़ाबिल मैं दुन्या व मा फ़ीहा या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है, सब को ठुकरा दूं, तेरी एक जान तो क्या अगर 100 जानें भी हों और एक एक कर के सब क़ुरबान करना पड़ें तो सब को क़ुरबान कर दूंगा मगर दीने इस्लाम से न फिरूंगा और न ही अपने मह़बूब का दामन छोड़ूंगा।"**[1]

बक़ौल मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रत अ़ल्लामा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن :

येह इक जान क्या है अगर हों करोड़ों
तेरे नाम पर सब को वारा करूं मैं
मेरा दीनो ईमां फ़रिश्ते जो पूछें
तुम्हारी ही जानिब इशारा करूं मैं

---

[1] ......تفسیرالبغوی،العنکبوت،تحت الایة:۸،ج۳،ص۳۹۶

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ का येह ईमान अफ़रोज़ जवाब सुन कर मां मायूस हो गई और उस ने खाना पीना शुरूअ़ कर दिया।

नाम के आ़शिक़ या काम के ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान की वालिदैन, औलाद, भाई, बहन, बीवी, ख़ानदान, माले तिजारत और मकान वग़ैरा से मह़ब्बत फ़ित़री चीज़ है मगर क़ुरबान जाइये ! सह़ाबए किराम علیہم الرضوان के इ़श्क़े रसूल पर कि जब ह़बीबे ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم का मुआ़-मला आया और मह़बूब से जुदाई की हलकी सी आहट भी मह़सूस की तो उन तमाम रिश्तेदारियों को न सिर्फ़ पसे पुश्त डाल दिया बल्कि उन से ऐसी बे रुख़ी का इज़्हार किया कि ख़ुद इ़श्क़ भी उन पर फ़ख़्र करने लगा। यक़ीनन तमाम सह़ाबए किराम علیہم الرضوان नाम के नहीं बल्कि काम के आ़शिक़ थे, **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضی اللہ تعالٰی عنہ के इ़श्क़े मह़बूब पर हज़ारों जानें क़ुरबान ! जिन्हों ने अपने इ़श्क़ भरे जज़्बात की अ़क्कासी इस अ़ज़ीमुश्शान अन्दाज़ में की, कि क़ियामत तक आने वाले तमाम उ़श्शाक़ इन के इ़श्क़ से फ़ैज़ ह़ासिल करते रहेंगे।

सह़ाबए किराम علیہم الرضوان का इ़श्क़े रसूल तो येह था कि मह़बूब के मुक़ाबले में हर चीज़ को ठुकरा देते, **मगर अफ़्सोस !** एक हमारा भी इ़श्क़े रसूल है, दा'वे तो आस्मान से बातें करते हैं लेकिन इसी मह़बूब की लाई हुई शरीअ़त पर अ़मल में कोताही हमारे रगो पै

में बस चुकी है, मुस्तहब्बात व सुनन तो दूर की बात फ़राइज़ भी सहीह तरह अदा नहीं करते, **ऐ काश ! हम सिर्फ़ नाम के नहीं बल्कि काम के आशिक़** बन जाएं। ऐ रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ! हम सब के सीने भी इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बहरे बे करां से इस तरह भर दे कि इत्तिबाए हबीब व इत्तिबाए फ़िदायाने हबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم وَرَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم से हमें दोनों जहां में सर-फ़राज़ी व सुर्ख़-रूई नसीब हो जाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

"इताअत" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से वालिदैन की इताअत करने या न करने के मु-तअल्लिक़ 5 म-दनी फूल

(1)......वालिदैन का हर वोह हुक्म जो शरअन जाइज़ हो उस पर फ़ौरन अमल कर लिया जाए अगर्चे वोह काफ़िर व फ़ासिक़ हों, उन के कुफ़्र व फ़िस्क़ की वज्ह से ना फ़रमानी करना जाइज़ नहीं कि इस का वबाल उन्हीं पर है। अलबत्ता ! औलाद को चाहिये कि उन से बसद अ-दबो एहतिराम गुज़ारिश करे अगर मान लें तो बेहतर, वरना सख़्ती न करे बल्कि तन्हाई में उन के लिये सिदक़े दिल से दुआ करे।

(2)......अगर वोह किसी ख़िलाफ़े शर-अ काम म-सलन फ़राइज़ व वाजिबात से कोताही या मा'सियत में मुब्तला होने का हुक्म दें तो उन की इताअत जाइज़ नहीं क्यूं कि "**لَا طَاعَةَ لِاَحَدٍ فِیْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى**" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में

किसी की इताअ़त जाइज़ नहीं।[1]

(3)......नफ़्ल नमाज़ में हो और मां बाप पुकारें और उन को इस का नमाज़ में होना मा'लूम न हो तो नमाज़ तोड़ दे और जवाब दे बा'द में उस नमाज़ की क़ज़ा पढ़ ले।[2]

(4)......जिहाद के सिवा किसी काम के लिये सफ़र करना चाहता है म-सलन तिजारत या ह़ज या उ़म्रह के लिये सफ़र करना चाहता है इस के लिये वालिदैन से इजाज़त ह़ासिल करे, अगर वालिदैन इस सफ़र को मन्अ़ करें और इस को अन्देशा हो कि मेरे जाने के बा'द इन की कोई ख़बर गीरी न करेगा और इस के पास इतना माल भी नहीं है कि वालिदैन को भी दे और सफ़र के मसारिफ़ (या'नी अख़राजात) भी पूरे करे, ऐसी सूरत में बिग़ैर इजाज़ते वालिदैन सफ़र को न जाए और अगर वालिदैन मोह़ताज न हों, उन का नफ़्क़ा (या'नी रोटी, कपड़े वग़ैरा का ख़र्च) औलाद के ज़िम्मे न हो मगर वोह सफ़र ख़त़रनाक है हलाकत का अन्देशा है, जब भी बिग़ैर इजाज़त सफ़र न करे और हलाकत का अन्देशा न हो तो बिग़ैर इजाज़त सफ़र कर सकता है। बिग़ैर इजाज़ते वालिदैन इ़ल्मे दीन पढ़ने के लिये सफ़र किया इस में ह़रज नहीं और इस को वालिदैन की ना फ़रमानी नहीं कहा जाएगा।[3]

1...... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 157, मुलख़्ख़सन
2...... जन्नती ज़ेवर, नमाज़ तोड़ देने के आ'ज़ार, स. 294
٣......الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة، الباب السادس والعشرون، ج۵، ص۳۶۵، ۳۶۶ ملتقطاً

(5)......अगर कोई शख़्स परदेस में है वालिदैन उसे बुलाते हैं तो आना ही होगा, ख़त लिखना काफ़ी नहीं है। वालिदैन को इस की ख़िदमत की हाजत हो तो आए और उन की ख़िदमत करे।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नती की आमद मरहबा :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अ-श-रए मुबश्शरह رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن में से हैं, वैसे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन दस सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को जन्नत की ख़ुश ख़बरी दी लेकिन **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक और मक़ाम पर भी इन की ग़ैर मौजू-दगी में जन्नत की बिशारत दी। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक दिन हम **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे हुए थे कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**इस दरवाज़े से अभी एक जन्नती दाख़िल होगा।**" तो हम ने देखा कि उस दरवाज़े से **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ दाख़िल हुए।[2]

---

[1]...... बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़स्सा : 16, स. 559

[۲]......كنز العمال، كتاب الفضائل من قسم الافعال، باب فضائل الصحابة، حرف السين، سعدبن ابى وقاص، الحديث:٣٧١٠٨، ج١٣، ص١٨٠

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रफ़ीक़े जन्नत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में दाख़िल हुए और उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें ख़ुश ख़बरी न दूं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !" फ़रमाया :

......तुम्हारे वालिद या'नी **अबू बक्र** जन्नती हैं और जन्नत में उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام होंगे ।

......**उ़मर** जन्नती हैं इन के जन्नती रफ़ीक़ ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام होंगे ।

......**उ़स्मान** जन्नती हैं इन का रफ़ीक़ मैं ख़ुद हूं ।

......**अ़ली** जन्नती हैं इन के रफ़ीक़ ह़ज़रते यह़्या बिन ज़-करिया عَلَیْہِمَا السَّلَام होंगे ।

......**त़ल्ह़ा** जन्नती हैं इन के रफ़ीक़ ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام होंगे ।

......**ज़ुबैर** जन्नती हैं इन के रफ़ीक़ ह़ज़रते इस्माइ़ल عَلَیْہِ السَّلَام होंगे ।

......**सा'द बिन अबी वक़्क़ास जन्नती हैं इन के रफ़ीक़ ह़ज़रते सुलैमान बिन दावूद** عَلَیْہِمَا السَّلَام **होंगे ।**

......**सई़द बिन ज़ैद** जन्नती हैं, इन के रफ़ीक़ ह़ज़रते मूसा बिन इ़मरान عَلَیْہِ السَّلَام होंगे ।

......**अ़ब्दुर्रह़मान बिन औफ़** जन्नती हैं और इन के रफ़ीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा बिन मरयम عَلَیْہِ السَّلَام होंगे ।

......**अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** जन्नती हैं और इन के रफ़ीक़ ह़ज़रते इदरीस عَلَیْہِ السَّلَام होंगे।

फिर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! मैं मुर–सलीन का सरदार हूं, तुम्हारे वालिद **अफ़्ज़लुस्सिद्दीक़ीन** (या'नी सच्चों में सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाले) हैं और तुम उम्मुल मुअमिनीन (या'नी मुअमिनीन की मां) हो।"[1]

राहे ख़ुदा में सब से पहला तीर :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आग़ोशे इस्लाम में आए तो इस्लाम की मह़ब्बत इन के दिल में इस त़रह़ बस गई कि इस की ख़ात़िर तन मन धन क़ुरबान करने का जज़्बा इन की नस नस में सरायत कर गया और कई मवाक़ेअ़ पर इन्हों ने इस का अ़–मली मुज़ा–हरा भी फ़रमाया, **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह अ़ज़ीम सआ़दत नसीब हुई कि कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ सब से पहला तीर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही चलाया। चुनान्चे,

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार, मक्की म–दनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तक़रीबन साठ या अस्सी मुहाजिरीन के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदा बिन ह़ारिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सफ़ेद झन्डे के साथ अमीर बना कर **जुह़फ़ा** से दस मील के फ़ासिले पर **राबिग़** नामी मक़ाम की त़रफ़ रवाना फ़रमाया। इस

[1]......الرياض النضره، ج ١، ص ٣٥

लश्कर के अ़लम बरदार ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्त़ह़ बिन उसासा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे । जब येह लश्कर वादिये राबिग़ में "सनिय्यतुल मुर्रह" के पास एक चश्मे पर पहुंचा तो अबू सुफ़्यान या अबू जह्ल के बेटे इक्रिमा (जो बा'द में मुसल्मान हो गए थे) की कमान में दो सो कुफ़्फ़ारे कुरैश जम्अ़ थे, दोनों लश्करों का आमना सामना हुवा । ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुफ़्फ़ार पर तीर फेंका, **येह सब से पहला तीर था जो मुसल्मानों की त़रफ़ से कुफ़्फ़ारे मक्का पर चलाया गया ।** आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तरकश में मौजूद **बीस के बीस** तीर इस महारत व चाबुक दस्ती से चलाए कि हर तीर किसी इन्सान या जानवर को जख़्मी कर गया । कुफ़्फ़ार इन तीरों की मार से घबरा कर फ़िरार हो गए इस लिये दोनों लश्करों के माबैन कोई जंग नहीं हुई ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस अ़ज़ीम सआ़दत को कुछ यूं बयान फ़रमाया करते कि **"मैं अ़रब का वोह पहला शख़्स हूं जिस ने अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की राह में सब से पहले तीर चलाया ।"**[2]

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी :

इब्तिदाए इस्लाम में जब सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان नमाज़

---

[1] ......كتاب المغازى للواقدى، سرية عبيدة بن الحارث الى رابغ، ج ۱، ص ۱۰
سبل الهدى والرشاد، الباب الخامس فى سرية عبيدة بن الحارث، ج ۶، ص ۱۳

[2] ......صحيح البخارى، كتاب فضائل اصحاب النبى، باب مناقب سعد بن ابى وقاص، الحديث: ۳۷۲۸، ج ۲، ص ۵۴۱

पढ़ने का इरादा करते तो मुश्रिकीन की नज़्रों से बचने के लिये मक्का की एक घाटी की जानिब चले जाते और वहां नमाज़ अदा करते। एक बार हस्बे मा'मूल सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان नमाज़ में मश्ग़ूल थे कि कुछ मुश्रिकीन उधर आ निकले और सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان पर आवाज़ें कसने लगे और मज़ाक़ उड़ाने लगे। फिर बात इस क़दर बढ़ी कि हाथा पाई शुरूअ़ हो गई तो "**हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **की ग़ैरते ईमानी जोश में आई और आप** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **ने ऊंट के जबड़े की हड्डी एक काफ़िर को दे मारी जिस से उस का सर फट गया।**" यूं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही वोह खुश नसीब शख़्सिय्यत हैं जिन्हें इस्लाम की ख़ातिर सब से पहले किसी काफ़िर का ख़ून बहाने की सआदत नसीब हुई।[1]

चार ग़यूर सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان में होता था जिन्हें कुफ़्फ़ार के मुआ़-मले में बहुत ग़यूर और सख़्त समझा जाता था और ऐसा क्यूंकर न होता क्यूं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तो वोह खुश नसीब सहाबी हैं जिन्हों ने अपने महबूब आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़ाबले में अपनी मां तक की परवाह नहीं की तो किसी दूसरे की क्या मजाल कि इन के सामने इस्लाम के ख़िलाफ़ एक लफ़्ज़ भी मुंह से निकाले। चुनान्चे,

[1]......اسد الغابۃ، سعد بن مالک القرشی، ج ۲، ص ۴۳۴

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिन चार अस्हाब को कुफ़्फ़ार के मुआ-मले में इन्तिहाई ग़यूर, सख़्त और निहायत ही मज़बूत व ताक़त वर समझा जाता था वोह येह हैं : **(1)** अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **(2)** अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم **(3)** हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन अव्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और **(4)** हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।[1]

राहे खुदा में तकालीफ़ और उन पर सब्र :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि इब्तिदाई दौर में इस्लाम लाने की सआदत से मुशर्रफ़ हुए थे इस लिये इन्हें राहे खुदा में तकालीफ़ भी बहुत ज़ियादा बरदाश्त करना पड़ीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद इन तकालीफ़ को बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ''मक्कए मुकर्रमा में हम लोगों ने **रहमते आलम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ बड़ी मुसीबत भरी ज़िन्दगी गुज़ारी, अलबत्ता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हम पर खुसूसी फ़ज़्लो करम फ़रमाया कि तक्लीफ़ों पर सब्र की दौलत अता फ़रमाई यहां तक कि हमें तंगी व तक्लीफ़ बरदाश्त करने की आदत हो गई । मैं एक रात क़ज़ाए हाजत के लिये बाहर निकला तो मेरे पाउं से एक चीज़ टकराई, मैं ने ग़ौर से देखा तो वोह ऊंट की खाल का एक टुकड़ा था,

[1]......تاریخ مدینۃ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ۲۰، ص ۳۲۲

मैं ने उसे उठा लिया फिर उसे धो कर जलाया, दो पथ्थरों के दरमियान रख कर पीसा और उसे खा कर पानी पी लिया और मैं ने तीन दिन इसी पर गुज़ार दिये।"[1]

येह आज़्माइश क्यूं...?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम के इब्तिदाई अय्याम में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर आने वाली तकालीफ़ और इन पर अ़ज़ीम सब्रो इस्तिक़ामत से हमें भी म-दनी फूल ह़ासिल करने चाहिएं, अगर राहे ख़ुदा में सफ़र करते हुए हमें भी कोई तक्लीफ़ पेश आ जाए म-सलन खाना वक़्त (Time) पर न मिले या कोई सामान वग़ैरा चोरी हो जाए तो हमारी ज़बान पर शिक्वा व शिकायत वाले अल्फ़ाज़ जारी हो जाते हैं कि हम तो राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर हैं फिर भी **येह आज़्माइश क्यूं ?** तो बे सब्री का मुज़ा-हरा करने के बजाए सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की इन तकालीफ़ को याद कर लिया करें اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन शैत़ानी वसाविस की काट हो जाएगी। बल्कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरते त़य्यिबा पर ग़ौर करें तो कई ऐसे वाक़िआ़त भी मिलते हैं जिन में उन्हों ने रिज़ाए ख़ुदावन्दी के ह़ुसूल की ख़ात़िर ख़ुद आगे बढ़ कर तकालीफ़ को गले लगा लिया। चुनान्चे,

अ़जीबो ग़रीब दुआ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

[1] ......حلية الاولياء، سعد بن ابي وقاص، الحديث: ۲۹۴، ج ۱، ص ۱۳۵

फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए उहुद के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे पास आए और कहा कि "तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कोई दुआ़ क्यूं नहीं करते ?" चुनान्चे हम दुआ़ के लिये एक जानिब चले गए । पहले मैं ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में यूं दुआ़ की : "**ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! कल जब काफ़िरों से हमारा सामना हो तो मेरे मुक़ाबले में इन का इन्तिहाई त़ाक़त वर और जंग-जू शह सुवार आए । मैं तेरी राह में उस से लड़ूं और वोह मुझ से लड़े फिर तू मुझे उस पर ग़-लबा नसीब करे ह़त्ता कि मैं उसे क़त्ल कर दूं और उस के हथियार वग़ैरा ले लूं ।**" पस मेरी दुआ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने "आमीन" कहा और फिर यूं बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "**ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! कल मेरे मुक़ाबले में काफ़िरों का इन्तिहाई बहादुर और त़ाक़त वर पहलवान आए । मैं उस से लड़ूं और वोह मुझ से लड़े ह़त्ता कि वोह मुझ पर क़ाबू पा ले और मेरे नाक और कान काट डाले और फिर जब मैं तेरी बारगाह में ह़ाजिर होउं और तू मुझ से पूछे कि ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तूने किस की ख़ात़िर येह नाक और कान कटवाए ? तो मैं अ़र्ज़ करूं : तेरे और तेरे प्यारे ह़बीब** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की ख़ात़िर । तो तू फ़रमाए : हां ! तूने सच कहा ।**"

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ मेरी दुआ़ से बेहतर थी । चुनान्चे मैं ने जंग के बा'द देखा

कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को न सिर्फ़ शहादत के मर्तबे पर फ़ाइज़ फ़रमाया बल्कि उन की दूसरी दुआ़ को भी क़बूल फ़रमाया क्यूं कि मैं ने देखा कि उन के कान और नाक एक धागे से पिरोए हुए हैं ।[1]

बारगाहे रिसालत से दराज़िये उ़म्र की दुआ़ :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में शदीद बीमार हो गए कि उन्हें अपनी ज़िन्दगी की उम्मीद न रही तो वोह बेचैन हो गए क्यूं कि उन्हें पसन्द न था कि उन का इन्तिक़ाल उस सर ज़मीन (या'नी मक्का) में हो जिस से वोह हिजरत कर चुके हैं । चुनान्चे **रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए तो आप ने उन की बे क़रारी देख कर तसल्ली दी और दराज़िये उ़म्र की दुआ़ फ़रमाते हुए येह भी बिशारत दी कि "**तुम अभी नहीं मरोगे बल्कि तुम्हारी ज़िन्दगी लम्बी होगी और बहुत से लोगों को तुम से नफ़्अ़ और बहुत से लोगों को नुक़्सान होगा ।**"[2]

येह **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये फ़ुतुह़ाते अ़जम की बिशारत थी । क्यूं कि तारीख़ गवाह है कि हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब बतौ़रे इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ईरान पर फ़ौज कशी की तो बहुत ही क़लील अ़र्से में किस्रा शाहे ईरान के तख़्तो ताज के ग़ुरूर को ख़ाक

---

[1]...... تاریخ مدینۃ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ۲۰، ص ۳۴۰

[2]...... صحیح البخاری، کتاب الوصایا، باب ان یترک ورثتہ...الخ، الحدیث: ۲۷۴۲، ج ۲، ص ۲۳۲

में मिला दिया। इस तरह मुसल्मानों को इन की ज़ात से बड़ा फ़ाएदा हुवा तो बे शुमार कुफ़्फ़ार को इन की ज़ात से नुक़्साने अ़ज़ीम पहुंचा।

आप ने कूफ़ा शह्र आबाद किया :

अबुल अ़ब्बास शम्सुद्दीन अह़मद बिन मुह़म्मद बिन अबी बक्र बिन ख़ल्लिकान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان **वफ़य्यातुल आ'यान** में फ़रमाते हैं कि सत्तरहवीं सिने हिजरी में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से कूफ़ा शह्र की बुन्याद ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रखी।[1]

आप के हाथों होने वाली फ़ुतूह़ात :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इराक़ की जानिब एक लश्कर रवाना फ़रमाया तो **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस का अमीर बनाया, चुनान्चे क़ादिसिय्या, इराक़, मदाइन और मुल्के फ़ारस के दीगर शहरों की फ़त्ह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्ही के हाथों मुक़द्दर फ़रमाई, बा'द में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कूफ़े का गवर्नर बना दिया।[2]

बह़्रे ज़ुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हम ने :

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे

---

[1]......وفیات الأعیان، ج ١، ص ٢١٢

[2]......تاریخ مدینۃ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ٢٠، ص ٢٩٤

ख़िलाफ़त में हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सिपह सालारी में "जंगे क़ादिसिय्या" में लश्करे इस्लाम ने शानदार काम्याबी हासिल की, "क़ादिसिय्या" की अज़ीमुश्शान फ़त्ह के बा'द हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने "बाबिल" मक़ाम तक आतश परस्तों का तआ़क़ुब किया और आस पास के सारे अ़लाक़े फ़त्ह कर लिये। ईरान का दारुल ख़िलाफ़ा "मदाइन" जो कि दरियाए दज्ला के मशरिक़ी कनारे पर वाक़ेअ़ था, यहां से क़रीब ही था। अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हिदायत के मुताबिक़ हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ "मदाइन" की त़रफ़ बढ़े, आतश परस्तों ने दरिया का पुल तोड़ दिया और तमाम कश्तियां दूसरे कनारे की त़रफ़ ले गए। उस वक़्त दरिया में ज़बर दस्त तुग़्यानी थी और उस को पार करना ब ज़ाहिर ना मुम्किन नज़र आता था, हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह कैफ़िय्यत देखी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर अपना घोड़ा दरिया में डाल दिया ! दूसरे मुजाहिदीन ने भी आप के पीछे पीछे अपने घोड़े दरिया में उतार दिये, किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

दश्त तो दश्त हैं दरिया भी न छोड़े हम ने

बह़्रे ज़ुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हम ने

देव आ गए...! देव आ गए...!

दुश्मनों ने जब देखा कि मुजाहिदीने इस्लाम दरियाए दज्ला

के फुन्कारते हुए पानी का सीना चीरते हुए मर्दाना वार बढ़े चले आ रहे हैं तो उन के होश उड़ गए और "देवां आ–मदन्द देवां आ–मदन्द" या'नी **देव आ गए देव आ गए** कहते हुए सर पर पैर रख कर भाग खड़े हुए। शाहे किस्रा का बेटा यज़्द गर्द अपना ह़रम (या'नी घर की औरतें) और ख़ज़ाने का एक हिस्सा पहले ही "हुल्वान" भेज चुका था अब ख़ुद भी मदाइन के दरो दीवार पर ह़सरत भरी नज़र डालता हुवा भाग निकला। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ "मदाइन" में दाख़िल हुए तो हर त़रफ़ इब्रत नाक सन्नाटा छाया हुवा था, किस्रा के पुर शिकौह मह़ल्लात, दूसरी बुलन्दो बाला इमारात और सर सब्ज़ो शादाब बाग़ात ज़बाने ह़ाल से दुन्याए दूं (या'नी ह़क़ीर दुन्या) की बे सबाती (या'नी ना पाएदारी) का ए'लान कर रहे थे। येह मन्ज़र देख कर बे इख़्तियार ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ की ज़बाने मुबारक पर पारह 25 **सू-रतुद्दुख़ान** की आयात 25 ता 29 जारी हो गई :

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿۲۵﴾ وَّ زُرُوْعٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿۲۶﴾ وَّ نَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿۲۷﴾ كَذٰلِكَ ۫ وَ اَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۲۸﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेत और उ़म्दा मकानात, और ने'मतें जिन में फ़ारिग़ुल बाल थे, हम ने यूंही किया, और उन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया, तो उन पर आस्मान और

ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी गई ।[1] السَّمَآءُ وَ الْاَرْضُ وَ مَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿۲۹﴾ (پ۲۵،الدخان:۲۵تا۲۹)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मु-तअ़ल्लिक़ा आयात :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद इर्शाद फ़रमाते हैं कि मेरे मु-तअ़ल्लिक़ कुरआने पाक की चार आयात नाज़िल हुईं ।

पहली आयत :

जंगे बद्र में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुफ्फ़ार के ना क़ाबिले शिकस्त समझे जाने वाले सरदार सईद बिन आ़स को वासिले जहन्नम किया और उस की तलवार ले ली जो कि बहुत वज़्नी और क़ीमती थी । उसे ले कर मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचे और साथ ही येह ख़्वाहिश भी ज़ाहिर की, कि येह तलवार मुझे अ़त़ा कर दी जाए लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इस को माले ग़नीमत में जम्अ़ करवा दो ।" (क्यूं कि उस वक़्त तक माले ग़नीमत में तसर्रुफ़ जाइज़ नहीं था) पस मैं वहां से पलटा और अपने भाई के शहीद हो जाने और अपना माल या'नी तलवार चले जाने की वज्ह से अफ़्सुर्दा था, अभी थोड़ा दूर ही गया था कि **सू-रतुल अन्फ़ाल** की पहली आयते मुबा-रका नाज़िल हो गई :

---

[1]......الکامل فی التاریخ، ذکر فتح المدائن التی فیھا ایوان کسری، ج۲، ص۳۵۷تا۳۶۰ مختصراً

یَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَصْلِحُوْا ذَاتَ بَیْنِكُمْ ۪ وَ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ① (پ۹، الانفال:۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब तुम से ग़नीमतों को पूछते हैं तुम फ़रमाओ ग़नीमतों के मालिक **अल्लाह** व रसूल हैं तो **अल्लाह** से डरो और अपने आपस में मेल रखो और **अल्लाह** व रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो।

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे बुला कर फ़रमाया : जाओ और अपनी तलवार ले लो।[1]

दूसरी आयत :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम लाते ही उन की वालिदा बहुत ग़मगीन हो गई और उस ने क़सम खाई कि वोह इन से उस वक़्त तक बात करेगी न खाए पियेगी जब तक कि वोह दीने इस्लाम को छोड़ न दें और बड़े मान से कहने लगी : ''तुम्हारा तो येह कहना है कि तुम्हारे रब ने तुम्हें वालिदैन की इताअ़त व फ़रमां बरदारी का हुक्म दिया है लिहाज़ा मैं तेरी मां हूं और तुझे दीने इस्लाम छोड़ने का हुक्म देती हूं।'' वोह तीन दिन तक इसी हाल में रही न खाया न पिया यहां तक कि बेहोश हो गई। कुछ होश आया तो वोह **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बद-दुआ देने लगी, तब कुरआने मजीद की येह

[1]……عمدۃ القاری، کتاب تفسیر القرآن، باب سورۃ الانفال، الحدیث ۴۶۴۵، ج ۱۲، ص ۲۴۸

आयते मुबा-रका नाज़िल हुई :

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ

(پ۲۰، العنکبوت:۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने आदमी को ताकीद की अपने मां बाप के साथ भलाई की और अगर वोह तुझ से कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे इल्म नहीं तो उन का कहा न मान ।[1]

तीसरी आयत :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना एक वाक़िआ़ बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "जब शराब की हुर्मत का हुक्म नाज़िल न हुवा था तो मैं मुहाजिरीन व अन्सार के चन्द नौ जवानों के पास पहुंचा जो "**ह़श**" नामी एक बाग़ में जम्अ़ थे और उन के पास भुना हुवा ऊंट का गोश्त और शराब भी थी, उन की दा'वत पर मैं भी उन के साथ शामिल हो गया, कुछ देर बा'द मेरी ज़बान से येह अल्फ़ाज़ निकले : "मुहाजिरीन अन्सार से बेहतर हैं" जिस पर एक शख़्स ने हड्डी उठा कर मुझे दे मारी, मेरी नाक ज़ख़्मी हो गई, बहर ह़ाल बात आई गई हो गई । मैं बा'द में दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और येह सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया जिस पर पारह 7 **सू-रतुल**

[1] ......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب فی فضل سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۲۴۱۲، ص ۱۳۱۵ ملخصاً

माइदह की आयत नम्बर 90 नाज़िल हुई :

اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَیْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾

(پ۷، المائدة:۹۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : शराब और जुवा और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैतानी काम। तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ।[1]

चौथी आयत :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक बार मैं ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर चार सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم बारगाहे रिसालत में हाज़िर थे, इसी दौरान कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आई, हमारी ग़ुरबत और अदना लिबास देख कर वोह लोग कहने लगे कि हमें इन लोगों के पास बैठते हुए शर्म आती है, अगर आप इन्हें अपनी मजलिस से निकाल देंगे तो हम आप के पास आएंगे। **शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की इस शर्त़ को मन्ज़ूर न फ़रमाया। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम उस की

[1] ...... صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب فی فضل سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۲۴۱۲، ص ۱۳۱۲

وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَیْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ (پ۷، الانعام:۵۲)

रिज़ा चाहते तुम पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे ह़िसाब से कुछ नहीं फिर उन्हें तुम दूर करो तो येह काम इन्साफ़ से बईद है ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मेरे मां बाप तुम पर कु़रबान :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان जैसे ही दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दामने रह़मत से वाबस्ता हुए तो ख़ुश बख़्तियों और सआ़दतों ने इन के आस्तानों पर डेरे डाल लिये, बल्कि फ़क़्रो फ़ाक़ा और तंगदस्ती भी इन के दरबार से फ़ैज़ लेने पहुंच जाया करते थे, येह सोह़बते रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही का फ़ैज़ान था कि आज सारा ज़माना इन की ग़ुलामी पर नाज़ करता है क्यूं न हो कि

दामने मुस्त़फ़ा से जो लिपटा यगाना हो गया
जिस के ह़ुज़ूर हो गए उस का ज़माना हो गया

तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अपना तन मन धन सब कुछ फ़िदा करने के लिये हमा वक़्त तय्यार रहा करते थे, **सरकारे मदीना,**

---

[1] ……تاریخ مدینۃ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص ج ۲۰ ص ۳۵۸

क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे नाज़ में हाज़िरी से क़ब्ल "**فِدَاکَ اَبِی وَ اُمِّی**" या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों" जैसे वालिहाना जज़्बात से इन की ज़बान हर वक़्त तर रहती थी, लेकिन कुरबान जाइये **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़िस्मत पर ! आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह सहाबी हैं जिन्हें खुद नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने हक़ तरजुमान से इर्शाद फ़रमाया : "**فِدَاکَ اَبِی وَ اُمِّی** या'नी ऐ सा'द ! तुझ पर मेरे मां बाप कुरबान।"

मोहसिने काएनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिस वारफ़्तगी और शफ़्क़त व प्यार भरे अन्दाज़ से येह इर्शाद फ़रमाया ग़ालिबन इस तरह कभी किसी सहाबी को न फ़रमाया। चुनान्चे,

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी किसी के लिये अपने मां बाप को जम्अ़ नहीं फ़रमाया सिवाए हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के। ग़ज़्वए उहुद के दिन **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खुद इन से इर्शाद फ़रमा रहे थे : "**اِرْمِ فِدَاکَ اَبِی وَ اُمِّی**" या'नी **तुम पर मेरे मां बाप कुरबान हों ! तीर मारो।"**[1]

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

[1] ......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب فی فضل سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۲۴۱۱، ص ۱۳۱۴

खु़द बयान करते हैं कि उहुद के दिन हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने वालिदैने करीमैन को मेरे लिये जम्अ़ फ़रमाया, इस त़रह़ कि मुश्रिकीन में से जंग में शरीक एक शख़्स मुसल्मानों को बहुत नुक़्सान पहुंचा रहा था, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ''**اِرْمِ فِدَاکَ اَبِیْ وَاُمِّیْ**'' या'नी तुम पर मेरे मां बाप फ़िदा हों तीर मारो।'' मैं ने एक बिग़ैर पर का तीर ले कर उस के पहलू पर मारा जिस से वोह गिर पड़ा और उस की शर्मगाह खुल गई, सरकारे वाला तबार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह सब मुला-ह़ज़ा फ़रमा रहे थे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतना मुस्कुराए कि मैं ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक दाढ़ों की ज़ियारत कर ली।[1]

तीर अन्दाज़ी में महारत का राज़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत माहिर तीर अन्दाज़ थे, मुख़्तलिफ़ जंगों में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को तीर अन्दाज़ी ही की ज़िम्मेदारी सोंपी जाती थी, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तीर अन्दाज़ी में महारत का राज़ येह था कि खु़द सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के लिये दुआ़ फ़रमाई थी। चुनान्चे,

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये यूं दुआ़ फ़रमाई : **اَللّٰھُمَّ سَدِّدْ سَھْمَہٗ** **या'नी**

[1]......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب فی فضل سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۲۴۱۲، ص ۱۳۱۵

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! सा'द के तीर को दुरुस्ती अ़ता फ़रमा ।[1]

दरबारे मुस्त़फ़ा के निगह्बान :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मदीनए मुनव्वरह आने के बा'द एक रात सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हो गए और इर्शाद फ़रमाया : काश ! मेरे सह़ाबा में से कोई नेक शख़्स आज रात मेरी निगह्बानी की सआ़दत ह़ासिल करता । उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि अभी हम इसी ह़ाल में बैठे हुए थे कि ऐसे लगा जैसे कोई आया हो और उस के पास हथियार भी हों । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : कौन है ? तो आवाज़ आई : सा'द बिन अबी वक़्क़ास । दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस वक़्त क्यूं आए हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : मेरे दिल में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तन्हाई के सबब कुफ़्फ़ार से नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा पैदा हुवा तो मैं बे क़रार हो कर ब ग-रज़े निगह्बानी चला आया । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की जां निसारी पर खुश हो कर दुआ़ दी और फिर आराम फ़रमाने लगे ।[2]

ख़ुसूसी मुह़ाफ़िज़ सह़ाबए किराम :

कुफ़्फ़ार चूंकि मोह़सिने काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात

---

[1]......کنز العمال، باب فضائل الصحابہ سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۳۶۶۴۰، ج۱۳، ص ۹۲

[2]......صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب فی فضل سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۲۴۱۰، ص ۱۳۱۴

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जानी दुश्मन थे और हर वक़्त ताक में लगे रहते थे कि अगर ज़रा भी मौक़अ़ मिल जाए तो ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शहीद कर डालें, बल्कि अपने नापाक अ़ज़ाइम की तक्मील के लिये वोह बारहा क़ातिलाना ह़म्ले भी कर चुके थे। इस लिये कुछ जां निसार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم बारी बारी रातों को आप की मुख़्तलिफ़ ख़्वाब गाहों और क़ियाम गाहों का शमशीर बकफ़ हो कर पहरा दिया करते थे। येह सिल्सिला एक अ़र्से तक जारी रहा और जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई :

وَاللّٰہُ یَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ط

(پ٦، المائدۃ:٦٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** तुम्हारी निगह्बानी करेगा लोगों से।

तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अब पहरा देने की कोई ज़रूरत नहीं, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने मुझ से वा'दा फ़रमा लिया है कि वोह मुझे मेरे तमाम दुश्मनों से बचाएगा।**"[1]

इन जां निसार पहरेदारों में चन्द ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ख़ुसूसिय्यत के साथ क़ाबिले ज़िक्र हैं, उन के अस्माए गिरामी येह हैं :

(1) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मस्लमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़क्वान बिन अ़ब्दे क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।

[1] ......سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب من سورۃ المائدۃ، الحدیث:٣٠٥٧، ج٥، ص٣٥ مفھوما

(5) हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन अव्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।

(6) **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।

(7) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बाद बिन बिश्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।

(8) हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।

(9) हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।

(10) हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरह बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।

सफ़ेद लिबास में मल्बूस दो शख़्स :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़्वए उहुद वोह अ़ज़ीमुश्शान मा'रिका है जिस में मुसल्मानों की मदद के लिये फ़िरिश्तों की जमाअ़तें आस्मान से उतरी थीं, **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन खुश नसीब सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन्हों ने उन फ़िरिश्तों को देखा था। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने उहुद के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दाएं और बाएं दो शख़्स देखे जो सफ़ेद लिबास में मल्बूस थे और हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब से बहुत ही शदीद लड़ाई लड़ रहे थे मैं ने इस से पहले न कभी उन को देखा था न आयिन्दा इस के बा'द कभी देखा। या'नी वोह हज़रते जिब्रील व मिकाईल عَلَیْہِمَا السَّلَام थे।[1]

[1]......الریاض النضرۃ، الباب الثامن فی مناقب سعد بن مالک، الفصل السادس، ج۲، ص۳۲۶

मुस्तजाबुद्दा 'वात :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुआ की क़बूलिय्यत के मुआ-मले में तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में मुमताज़ थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हर दुआ क़बूल हो जाती थी ख़्वाह वोह किसी के हक़ में होती या उस के ख़िलाफ़। इसी वज्ह से लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बद-दुआ से ख़ौफ़ खाते और दुआ की तमन्ना रखते थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ए'ज़ाज़ दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह से ह़ासिल हुवा था। चुनान्चे,

सुल्तानुल मु-तवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में बारगाहे ख़ुदा वन्दी में यूं दुआ फ़रमाई : **''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! सा'द जब भी तुझ से दुआ करे तू उस की दुआ क़बूल फ़रमा ।''**[1]

दुआ की क़बूलिय्यत का नुस्ख़ा :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुस्तजाबुद्दा'वात थे इन की दुआएं क़बूल हो जाती थीं, लेकिन इन की दुआओं की क़बूलिय्यत का सबब क्या था, वोह कौन सा नुस्ख़ा था जिस के सबब इन्हें येह सआदत ह़ासिल थी, आइये ! बारगाहे न-बवी से ह़ासिल होने वाले इस नुस्ख़े को देखते हैं जिस के सबब हम भी अपनी दुआओं को क़बूलिय्यत की मन्ज़िल तक पहुंचा सकते हैं। चुनान्चे,

[1]......سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۳۷۷۲، ج۵، ص ۴۱۸

हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मत्अ़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ फ़रमाइये कि वोह मेरी दुआ़ को क़बूल फ़रमाए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"ऐ सा'द ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **बन्दे की दुआ़ को उस वक़्त तक क़बूल नहीं फ़रमाता जब तक कि उस का रिज़्क़ पाक (या'नी ह़लाल) न हो जाए ।" हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुआ़ फ़रमा दीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी रोज़ी को पाको साफ़ फ़रमा दे क्यूं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ के बिग़ैर मैं तो इस की त़ाक़त नहीं रखता । पस सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मदद गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ फ़रमाई : **"ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! सा'द की रोज़ी को पाक फ़रमा दे ।"**

इस के बा'द **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह आ़लम हो गया कि गन्दुम की एक बाली भी अपने जानवरों के खुश्क चारे में देख लेते (और शक गुज़रता कि शायद येह इन के खेत की नहीं) तो खुद्दाम से इर्शाद फ़रमाते : **इस को वापस वहीं लौटा दो, जहां से इसे काटा है ।**[1]

हमारी दुआ़एं क़बूल नहीं होतीं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हमारी अक्सरिय्यत येही

[1] ......تاریخ مدینۃ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ۲۰ ص ۳۴۰

शिक्वा करती है कि "**हमारी दुआ़एं क़बूल नहीं होतीं**" ह़ालां कि दुआ़ की क़बूलिय्यत के अस्बाब में से सब से बड़ा और अहम सबब अपनी रोज़ी को पाक और ह़लाल करना है, जिस की त़रफ़ हमारी क़त़्अ़न तवज्जोह नहीं है, येही वज्ह है कि आज हम त़रह़ त़रह़ की परेशानियों और मुसीबतों में घिरे हुए हैं, यक़ीनन जिस त़रह़ अपने आप को लुक़्मए ह़राम से मह़फ़ूज़ रखना बहुत बड़ी सआ़दत है, इसी त़रह़ लुक़्मए ह़राम से मह़फ़ूज़ न रहना बहुत बड़ी मह़रूमी और रिज़्क़ में तंगी का सबब है। इस के इ़लावा एक लुक़्मए ह़राम चालीस दिन की नमाज़ों और दुआ़ओं की अ़-दमे क़बूलिय्यत का भी सबब है। चुनान्चे,

दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : "जिस ने ह़राम का एक लुक़्मा खाया उस की चालीस दिन की नमाज़ें क़बूल नहीं की जाएंगी और उस की दुआ़ भी चालीस दिन तक ना मक़्बूल होगी।"[1]

تُوبُوا اِلَی اللہ! اَسْتَغْفِرُ اللہ

उ़म्र बढ़ा दी गई :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ की दुआ़ और बद-दुआ़ दोनों की क़बूलिय्यत के बे शुमार वाक़िआ़त मिलते हैं। आप की दुआ़ की क़बूलिय्यत का एक मश्हूर वाक़िआ़ येह भी है कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने औलाद के ना बालिग़ होने की बिना पर अपने लिये दराज़िये उ़म्र की दुआ़ मांगी तो **अल्लाह** عزّوجلّ ने श-रफ़े क़बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमाया। चुनान्चे,

[1]......فردوس الاخبار، الحديث: ۱۲۶۳، ج ۲، ص ۳۰۰

मरवी है कि **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मर्तबा यूं दुआ़ फ़रमाई : **"ऐ मेरे मौला** عَزَّوَجَلَّ **! मेरी औलाद अभी छोटी है मुझे उस वक़्त तक मौत न देना जब तक कि वोह बालिग़ न हो जाए।"** चुनान्चे आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ यूं क़बूल हुई कि इस दुआ़ के बा'द मज़ीद बीस साल तक आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़िन्दा रहे।[1]

गुस्ताख़े सह़ाबा का इ़ब्रत नाक अन्जाम :

एक शख़्स **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शान में गुस्ताख़ी व बे अ-दबी के अल्फ़ाज़ बकने लगा, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से इर्शाद फ़रमाया : "तुम अपनी इस ख़बीस ह़-र-कत से बाज़ रहो वरना मैं तुम्हारे लिये बद-दुआ़ कर दूंगा।" उस गुस्ताख़ व बेबाक ने कहा : "मुझे आप की बद-दुआ़ की कोई परवाह नहीं, आप की बद-दुआ़ से मेरा कुछ बी नहीं बिगड़ सकता।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जलाल आ गया और आप ने उसी वक़्त येह दुआ़ मांगी कि **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! अगर इस शख़्स ने तेरे प्यारे ह़बीब** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **के प्यारे अस्ह़ाब की तौहीन की है तो आज ही इस को अपने क़ह्रो ग़ज़ब की निशानी दिखा दे ताकि दूसरों को इस से इ़ब्रत ह़ासिल हो।"** इस बद-दुआ़ के बा'द जैसे ही वोह शख़्स मस्जिद से बाहर निकला अचानक एक पागल ऊंट कहीं से दौड़ता

[1]......تاریخ مدینۃ دمشق، حضرت سعد بن ابی وقاص، ج ۲۰ ص ۳۵۰

हुवा आया और उस को अपने दांतों से चीर फाड़ दिया और उस के ऊपर बैठ कर इस क़दर ज़ोर से दबाया कि उस की पस्लियां टूट फूट गईं और वोह शख़्स फ़ौरन ही मर गया। येह मन्ज़र देख कर लोग दौड़े दौड़े **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास आए और कहने लगे कि आप की दुआ मक़्बूल हो गई और सहाबए किराम علیہم الرضوان का दुश्मन नेस्तो नाबूद हो गया।[1]

चील को सज़ा :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई **अल्लाह** वालों की शान में गुस्ताख़ी दुन्या व आख़िरत की बरबादी है, बिल ख़ुसूस सहाबए किराम علیہم الرضوان की गुस्ताख़ी तो ग़-ज़बे इलाही को दा'वत देना है, जब कि **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضی اللہ تعالٰی عنہ तो वोह सहाबी हैं जो मुस्तजाबुद्दा'वात थे, बल्कि ऐसे मुस्तजाबुद्दा'वात कि इन्सानों के इलावा आप की दुआ जानवरों के हक़ में भी क़बूल हो जाती थी। चुनान्चे,

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन अफ़्फ़ान رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : एक मर्तबा हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ के हाथ में गोश्त था, अचानक एक चील ने झपट्टा मारा और गोश्त उचक कर ले गई तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की ज़बां पर बे साख़्ता उस के लिये बद-दुआ के कलिमात जारी हो गए जिस का

---

[1] ......دلائل النبوة للبیهقی، باب ماجاء فی دعا رسول الله صلی الله علیه وسلم لسعد بن ابی وقاص---الخ، ج٦، ص١٩٠ ......تاریخ مدینه دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج٢٠، ص٣٤٦ ملتقطاً

असर येह हुवा कि उस गोश्त में मौजूद हड्डी उस के गले में फंस गई जिस के सबब वोह ज़मीन पर गिर कर मर गई ।[1]

ग़ीबत के ख़िलाफ़ जंग :

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रहीम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने साथियों के साथ कहीं बैठे हुए गुफ़्त-गू फ़रमा रहे थे कि उन्हों ने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم का तज़्किरा शुरूअ़ कर के उन की ग़ीबत शुरूअ़ कर दी। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ीबत का बायकाट करते हुए उन्हें सख़्ती से रोका और इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बुरा भला मत कहो क्यूं कि सरकारे दो जहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में रहते हुए भी अगर्चे हम से कुछ लग़्ज़िशें हुई लेकिन कुरआने पाक की इस आयते मुबा-रका ने सब के लिये बराअते आ़म्मा का ए'लान कर दिया है :

لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَاۤ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۶۸﴾

(پ۱۰، الانفال:۶۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर **अल्लाह** पहले एक बात लिख न चुका होता तो ऐ मुसल्मानों तुम ने जो काफ़िरों से बदले का माल ले लिया इस में तुम पर बड़ा अ़ज़ाब आता ।

[1] ......المجالسة وجواهر العلم، الجزء الثالث، الحديث: ۱۵۰، ج ۱، ص ۱۸۰

और हम देखते थे **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत हमारी जानिब लपक्ती थी।[1]

बुराई से रोकना बहुत बड़ी सआ़दत है :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई **اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر** या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने का येह एक अ़ज़ीम जज़्बा है कि जैसे ही कोई बुराई नज़र आए तो ह़िक्मते अ़-मली से उसे रोक दिया जाए क्यूं कि किसी मुसल्मान को गुनाह करते देख कर उसे रोक देना यक़ीनन बहुत बड़ी भलाई और सआ़दत है। ग़ीबत तो एक बहुत ही क़बीह़ गुनाहे कबीरा है, इस से अपने आप को बचाना और दीगर मुसल्मानों को बचने की तरग़ीब दिलाना बेह़द ज़रूरी है। चुनान्चे,

म-दनी मश्वरा :

ग़ीबत की ता'रीफ़, इस की मुख़्तलिफ़ मिसालें, तबाह कारियां और इस से मु-तअ़ल्लिक़ा दीगर उमूर पर मुश्तमिल दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल, शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तस्नीफ़ "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" का ज़रूर मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस गुनाहे कबीरा से बचने और दूसरों को बचाने का म-दनी ज़ेह्न मिलेगा।

[1] ......تاریخ مدینۃ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص ج ۲۰ ص ۳۵۸

उम्मत की ख़ैर ख़्वाही :

मरवी है कि **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब नमाज़ के लिये बाहर तशरीफ़ लाते तो कामिल रुकूअ़ व सुजूद के साथ मुख़्तसर नमाज़ अदा फ़रमाते लेकिन जब घर में नमाज़ अदा फ़रमाते तो त़वील नमाज़ पढ़ते। किसी ने वज्ह पूछी तो इर्शाद फ़रमाया : "हम क़ौम के इमाम व रहनुमा हैं जिन की इक़्तिदा की जाती है।"[1]

मा'लूम हुवा कि इमाम को चाहिये कि जमाअ़त की रिआ़यत करे और क़दरे मस्नून से ज़ियादा त़वील क़िराअत न करे कि येह मक्रूह है।[2]

सांप ने आप की इत़ाअ़त की :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बनी उ़ज़्रा की एक औ़रत से निकाह़ फ़रमाया : एक मर्तबा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने दोस्तों के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ने क़ासिद भेज कर घर बुलाया। कुछ ताख़ीर हो गई तो क़ासिद दोबारा पैग़ाम ले कर आ गया। चुनान्चे आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन घर तशरीफ़ ले गए और घर बुलाने की वज्ह पूछी, तो ज़ौजा ने बजाए जवाब देने के बिस्तर पर कुंडली मारे अज़्दहे की जानिब इशारा करते हुए अ़र्ज़ की : "क्या आप इसे देख रहे हैं ?" येह आप के निकाह़ में आने से पहले का मेरे पीछे पड़ा हुवा है मगर आप

[1]......تاریخ مدینة دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ۲۰، ص ۳۶۱

[2]......الفتاوی الهندیة، کتاب الصلاة، الباب الخامس فی الامامة، الفصل الثالث، ج ۱، ص ۸۷

के घर और ज़ौजिय्यत में आने के बा'द आज पहली मर्तबा येह यहां आया है। "**ह़ज़रते सय्यिदुना सा 'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अज़्दहे से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया : " क्या तू सुनता नहीं ? येह मेरी ज़ौजा है, मैं ने ह़क़्क़े महर के इवज़ इस से निकाह़ किया है और अब येह फ़क़त़ मेरे लिये ह़लाल है तेरे लिये इस का बाल बराबर ह़िस्सा भी जाइज़ नहीं। लिहाज़ा यहां से चला जा, दोबारा पलट कर कभी न आना।" येह सुनना था कि सांप वहां से भाग कर दरवाज़े से बाहर निकल गया। **ह़ज़रते सय्यिदुना सा 'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को उस का पीछा करने का हुक्म दिया ताकि पता चले कि वोह कहां जाता है ? वोह मस्जिदे न-बवी शरीफ़ के दरवाज़े से दाख़िल हो कर दरमियान में पहुंचा और जस्त लगा कर मस्जिद की छत में ग़ाइब हो गया, इस के बा'द दोबारा कभी पलट कर नहीं आया।[1]

शहादत की बिशारत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज-बले ह़िरा पर तशरीफ़ ले गए तो अचानक वोह लरज़ने लगा। मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े मह़शर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ ह़िरा ! ठहर जा कि इस वक़्त तुझ पर नबी, सिद्दीक़ और शहीद खड़े हैं। जब सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इर्शाद फ़रमाया उस वक़्त

---

[1]......دلائل النبوة للبیهقی، باب ماجاء في حرز الربیّع بنت مُعوِّذ ابن عفراء، ج٧، ص١١٧

आप के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना जु़बैर और **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن थे ।[1]

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अबू लू लू फ़ीरोज़ मजूसी ने ख़न्जर मार कर ज़ख़्मी किया और इसी से आप की शहादत हुई, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ारिजियों ने शहीद किया, ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा व जु़बैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا दोनों जंगे जमल में शहीद हुए । अलबत्ता **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शर–ई शहीद न हुए बल्कि इन की वफ़ात अपने घर में हुई चूंकि आप की वफ़ात किसी ऐसे मरज़ से हुई जिस में मौत शहादत होती है इस लिये आप को शहीद फ़रमाया गया ।''[2]

सल्त़नत व इ़ल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में जहां **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** व दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के लिये शहादत की बिशारत है वहीं सल्त़नते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वुस्अ़त भी ख़ूब उजागर हो रही है कि जानदार तो जानदार बे जान अश्या भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ताबेए़ फ़रमान हैं जभी तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लरज़ने वाले

---

[1]...... صحیح مسلم، کتاب فضائل صحابہ، باب من فضائل طلحۃ والزبیر، الحدیث: ٢٤١٧، ص ١٣١٨

[2]...... मिराआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 435 ता 436

पहाड़ को साकिन होने का हुक्म फ़रमाया तो वोह साकिन हो गया।

नीज़ इल्मे गै़बे मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बहारें भी फूल बिखेर रही हैं कि आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने फ़क़त़ **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضی اللہ تعالٰی عنہ ही नहीं बल्कि ह़िरा पहाड़ पर मौजूद दीगर चारों सह़ाबए किराम علیہم الرضوان के इन्तिक़ाल से क़ब्ल उन की शहादत को बयान फ़रमा दिया।

एक वस्वसा और उस का जवाब :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है कि शैत़ान किसी के दिल में येह वस्वसा डाले कि गै़ब का इ़ल्म तो सिर्फ़ **अल्लाह** عزوجل को है, अम्बियाए किराम या औलियाए इ़ज़ाम के लिय इ़ल्मे गै़ब का सुबूत कैसे हो सकता है ? चुनान्चे,

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ अपने रिसाले "ख़ौफ़नाक जादूगर" सफ़ह़ा नम्बर 11 पर इस वस्वसे का जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस में कोई शक नहीं कि **अल्लाह** عزوجل हर गा़इब व ह़ाज़िर को जानने वाला है, उस का इ़ल्मे गै़ब ज़ाती है और हमेशा हमेशा से है, जब कि अम्बियाए किराम علیہم الصلوۃ والسلام और औलियाए इ़ज़ाम رحمہم اللہ السلام का इ़ल्मे गै़ब अ़त़ाई है और हमेशा हमेशा से भी नहीं। उन्हें जब से **अल्लाह** عزوجل ने बताया तब से है और जितना बताया उतना ही है, उस के बताए बिगै़र एक ज़र्रे का भी नहीं।" चुनान्चे,

इ़ल्मे ग़ैब पर तीन आयात :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

(1)......وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ (پ۴، ال عمران:۱۷۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की शान येह नहीं कि ऐ आ़म लोगो तुम्हें ग़ैब का इ़ल्म दे दे हां **अल्लाह** चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे।

(2)......عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (پ۲۹، الجن:۲۷،۲۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत़ नहीं करता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के।

(3)......وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿۲۴﴾ (پ۳۰، التکویر:۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं।

इ़ल्मे ग़ैब पर तीन अह़ादीसे मुबा-रका :

﴾1﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "एक बार **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे दरमियान खड़े हुए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मख़्लूक़ की इब्तिदा से जन्नतियों के जन्नत में जाने और जहन्नमियों के जहन्नम में जाने तक के तमाम मुआ़-मलात की ख़बर दे दी। पस हम में से इसे जिस ने याद रखा सो याद रखा और जो भूल गया सो भूल

गया।''[1]

मा'लूम हुवा कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मख़्लूक़ात की पैदाइश से ले कर जन्नतियों के जन्नत में जाने और दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में दाख़िल होने तक के सारे ह़ालात का इ़ल्म है।

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़ैद अ़म्र बिन अख़्त़ब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : ''एक दिन **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई, फिर आप मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और बयान फ़रमाया यहां तक कि ज़ोहर हो गई, मिम्बर से नीचे तशरीफ़ लाए और नमाज़े ज़ोहर पढ़ाई, फिर मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और बयान फ़रमाया यहां तक कि अ़स्र हो गई, फिर नीचे तशरीफ़ लाए और नमाज़े अ़स्र पढ़ाई, फिर मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और बयान फ़रमाया यहां तक कि सूरज गुरूब हो गया। इस बयान में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो कुछ पहले हो चुका और आयिन्दा जो होगा तमाम वाक़िआ़त की हमें ख़बर दे दी, तो हम में सब से बड़ा आ़लिम वोह है जिसे वोह बयान ज़ियादा याद है।''[2]

मा'लूम हुवा कि हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **مَاكَانَ وَمَايَكُون** का इ़ल्म है या'नी आप गुज़श्ता और आयिन्दा के तमाम वाक़िआ़त जानते हैं।

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत

[1]......صحيح البخاري، كتاب بدء الخلق، الحديث: ٣١٩٢، ج ٢، ص ٣٧٥

[2]......صحيح مسلم، كتاب الفتن، باب اخبار النبي فيما يكون الى قيام الساعة، الحديث ٢٨٩٢، ص ١٥٤٦

है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये ज़मीन को समेट दिया तो मैं ने मशरिक़ से मग़रिब तक ज़मीन का तमाम हिस्सा देख लिया।"[1]

मा'लूम हुवा कि मशरिक़ व मग़रिब तक ज़मीन का हर हिस्सा सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे अक़्दस के सामने है। मज़ीद दलाइल के लिये आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की कुतुब "**الدولة المكية بالمادة الغيبية**", "**خالص الاعتقاد**", "**إنباء الحى**", "**إزاحة العيب بسيف الغيب**", "**إنباء المصطفى بحال سرّ وأخفى**", "**مالئ الجيب بعلوم الغيب**" मुला-हज़ा फ़रमाइये।

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

महबूबे ख़ुदा :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहज़ादी हज़रते सय्यि-दतुना आइशा बिन्ते सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करती हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा हो कर तीन रातें येह दुआ मांगी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस दरवाज़े से अपने उस बन्दे को दाख़िल फ़रमा जिसे तू महबूब रखता है और वोह तुझे महबूब रखता है।" चुनान्चे हम ने देखा कि सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ के

[1] ......المرجع السابق، باب هلاک هذه الامة بعضهم ببعض، الحديث: ٢٨٨٩ ص ١٥٤٤

बा'द हर बार इस दरवाज़े से मेरे वालिदे माजिद या'नी **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही दाख़िल हुए।[1]

ऐ काश ! मैं मर जाता :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें ऐसी नसीह़त फ़रमाई कि हमारे दिल नर्म कर दिये, **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे और बहुत रोए और कहने लगे : "**ऐ काश मैं मर जाता।**" हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ सा'द ! क्या मेरे सामने मौत की आरज़ू करते हो ?" तीन बार येही इर्शाद फ़रमाया। फिर फ़रमाया : "ऐ सा'द ! अगर तुम जन्नत के लिये पैदा किये गए हो तो जिस क़दर तुम्हारी उ़म्र ज़ियादा होगी और तुम्हारे अ़मल अच्छे होंगे येह इतना ही तुम्हारे लिये बेहतर है।"[2]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में इर्शाद फ़रमाते हैं : "या'नी क्या मेरी ज़िन्दगी में और मेरे पास रह कर मौत मांगते हो तुम्हें इस वक़्त मेरी सोह़बतें और ज़ियारतें नसीब हैं जो मौत से जाती रहेंगी, अगर्चे तुम्हें बा'दे मौत बड़े द-रजे मिलेंगे मगर वोह सारे द-रजे इस एक नज़र पर क़ुरबान जो तुम्हें अब मुयस्सर हैं। किसी फ़क़ीर से पूछा गया

---

[1]......تاریخ مدینۃ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ۲۰ ص ۳۲۷

[2]......تاریخ مدینہ دمشق، حفص بن عمر، ج ۱۴، ص ۴۲۳

कि मोमिन की ज़िन्दगी बेहतर है या मौत ? उस ने कहा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़यात में मोमिन की ह़यात बेहतर थी और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द अब मौत बेहतर है कि उस ज़माने में ज़िन्दगी में दीदार था और अब बा'दे मौत ही होगा।

जान तो जाते ही जाएगी क़ियामत येह है

कि यहां मरने पे ठहरा है नज़ारा तेरा

या'नी अगर दोज़ख़ के लिये पैदा किये गए हो तो मौत मांगने में कोई फ़ाएदा नहीं और अगर जन्नत के लिये तुम्हारी पैदाइश हुई तो मौत मांगना तुम्हारे लिये मुज़िर, क्यूं कि लम्बी उ़म्र में ज़ियादा नेकियां करोगे जिस से जन्नत में तुम्हारे द-रजे बढ़ेंगे, ख़याल रहे कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का "अगर" फ़रमाना बे इ़ल्मी की बिना पर नहीं, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़-श-रए मुबश्शरह में से हैं जिन के क़त़्ई जन्नती होने की ख़बर ख़ुद सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दे चुके हैं, इन का जन्नती होना ऐसा ही क़त़्ई व यक़ीनी है जैसा **अल्लाह** का एक होना येह "**اِنْ**" इ़ल्लत बयान करने के लिये है, जैसे रब तआ़ला फ़रमाता है : **اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ** ﴿۱۳۹﴾ (پ۴، اٰل عمران: ۱۳۹) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम्हीं ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो।" न सह़ाबा का ईमान मश्कूक न ख़ुदा इन के ईमान से बे ख़बर मा'ना येह हैं कि चूंकि तुम जन्नत के लिये पैदा किये जा चुके हो लिहाज़ा तुम्हारी दराज़िये उ़म्र बेहतर है।"[1]

---

[1]...... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 442 ता 443

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ और शफ़्क़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मर्तबा मैं मक्कए मुकर्रमा में सख़्त बीमार हो गया, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी इयादत के लिये तशरीफ़ लाए, मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या नबिय्यल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं तर्के में माल छोड़ रहा हूं, मेरे पीछे मेरी सिर्फ़ एक ही बेटी है, क्या मैं दो सुलुस राहे खु़दा में और एक सुलुस उस के लिये वसिय्यत कर जाऊं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमा दिया। मैं ने निस्फ़ कहा तो भी इन्कार फ़रमा दिया, फिर मैं ने अ़र्ज़ की : तिहाई की वसिय्यत कर के दो तिहाई बेटी के लिये छोड़ दूं ? तो इर्शाद फ़रमाया : "तिहाई की (वसिय्यत) कर दो तिहाई बहुत है, अगर तुम अपने वारिसों को मालदार छोड़ कर जाओ तो येह उन्हें ग़रीब छोड़ने से बेहतर है कि वोह लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें और जो कुछ तुम राहे खु़दा में ख़र्च करो वोह स-दक़ा है, यहां तक कि जो लुक़्मा तुम उठा कर बीवी के मुंह में डालो वोह भी स-दक़ा है और अ़न्क़रीब **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें बुलन्द कर देगा तो कितने ही लोग तुम से नफ़्अ़ उठाएंगे।" इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक मेरी पेशानी पर रखा, फिर चेहरे और पेट पर फैरा, इस के बा'द मेरे ह़क़ में यूं दुआ़ की : "**ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! सा'द को शिफ़ा अ़ता फ़रमा और इस की हिजरत को पायए तक्मील तक पहुंचा।" ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अब भी मैं उन ह़सीन और पुरकैफ़ लम्ह़ात को याद करता हूं तो शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

के **दस्ते शफ़्क़त की ठन्डक अपने जिगर में मह़सूस करता हूं।"[1]**

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में इर्शाद फ़रमाते हैं : "येह वाक़िआ़ फ़त्ह़े मक्का के साल का है। उस वक़्त आप मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में थे, सख़्त बीमार हो गए थे हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी जा-ए क़ियाम से आप की जा-ए क़ियाम पर सिर्फ़ मिज़ाज पुर्सी के लिये तशरीफ़ लाए मा'लूम हुवा कि अपने ख़ुद्दाम की मज़ाज पुर्सी बीमार पुर्सी के लिये इन के घर जाना सुन्नत है। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ मुबारक क़ुदरती त़ौर पर क़दरे ठन्डे थे जिन से दूसरे को निहायत ख़ुश गवार ठन्डक मह़सूस होती थी चूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिल की बीमारी थी इस लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बीमारी की जगह हाथ रखा। मा'लूम हुवा कि मरज़ की जगह हाथ रखना इ़यादत के लिये सुन्नत है। "फ़ुवाद" दिल को भी कहते हैं, दिल के पर्दे को भी और सीने को भी जो दिल का मक़ाम है। यहां ग़ालिबन सीना मुराद है।

दिल करो ठन्डा मेरा वोह कफ़े पा चांद सा
सीने पे रख दो ज़रा तुम पे करोड़ों दुरूद

मुबारक है वोह बीमारी जिस में ऐसे तीमार दार उम्मत के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद चल कर मरीज़ के पास आवें।[2]

सरे बालीं इन्हें रह़मत की अदा लाई है
ह़ाल बिगड़ा है तो बीमार की बन आई है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المرضی، باب وضع الید علی المریض، الحدیث: ۵۶۵۹، ج۴، ص۸

2 ...... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 40 ता 41

हर बाल के बदले नेकी :

हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिदे गिरामी से रिवायत करते हैं कि **रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदे न-बवी में तशरीफ़ फ़रमा थे, एक लड़का खड़ा हुवा और अ़र्ज़ करने लगा : صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ** ! या'नी ऐ **अल्लाह** के रसूल ! आप पर सलाम हो, मैं एक यतीम मिस्कीन लड़का हूं और मेरे साथ मेरी ज़ईफ़ वालिदा है, जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़त़ा फ़रमाया है उस में से थोड़ा सा हमें भी अ़त़ा फ़रमा दीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की रिज़ा चाहता है यहां तक कि आप राज़ी हो जाएं। हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ लड़के ! अपनी बात दोहराओ तुम्हारी ज़बान से तो फ़िरिश्ता बोल रहा है।**" उस ने अपने कलाम को दोहराया। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो कुछ आले रसूल के घर में है ले आओ।" पस एक बरतन (अनाज वग़ैरा का) पेश किया गया जो देखने में एक से ज़ियादा और दो लप से कम था। मोह़सिने काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लड़के ! येह ले जाओ इस में तुम्हारे लिये, तुम्हारी वालिदा और बहन के लिये दोपहर और रात का खाना है, मैं इस खाने में ब-र-कत की दुआ़ से तुम्हारी मदद करता रहूंगा।"

वोह लड़का वहां से रुख़्सत हो कर जब मस्जिद के दरवाज़े पर पहुंचा तो उस का सामना **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुवा आप ने उस के सर पर दस्ते शफ़्क़त

फैरा। उन्हें येह बात मा'लूम न थी कि इसे कुछ अ़ता किया गया है या नहीं ? फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे न-बवी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए तो सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं ने तुम्हें नहीं देखा जब तुम उस लड़के से मिले और उस के सर पर हाथ फैरा ?" **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं" सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**जिस जिस बाल पर तुम्हारा हाथ गुज़रा उस के बदले तुम्हारे लिये नेकी है।**" मा'लूम हुवा यतीम के सर पर हाथ फैरना मुस्तह़ब है।[1]

दीन के मददगार :

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह ख़ुश नसीब सह़ाबी हैं जिन्हें बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से "**नासिरुद्दीन**" या'नी दीन के मददगार का लक़ब अ़ता हुवा। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**ऐ सा'द ! तुम जहां भी होगे दीन के मददगार रहोगे।**"[2]

मो'तद बिही शख़्सिय्यत :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोग ऐसे होते हैं कि अच्छे अख़्लाक़ व अत्वार होने के बा वुजूद उन की शख़्सिय्यत ऐसी

[1]......مکارم الاخلاق، باب فضل التکفل بامر الایتام، الحدیث: ۱۰۹، ص ۳۵۲

[2]......الریاض النضرۃ، الباب الثامن فی مناقب سعد بن مالک، ذکر انہ ناصر الدین ج ۲ ص ۳۳۰

नहीं होती कि दीनी व दुन्यावी मुआ़-मलात में उन से मुशा-वरत की जाए या इन मुआ़-मलात में उन की शख़्सिय्यत पर ए'तिमाद किया जाए, उन की बात को क़ौले फ़ैसल की हैसिय्यत हासिल हो, अगर किसी की ज़ात में ऐसा म-लका मौजूद है तो यक़ीनन वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक अ़ज़ीम ने'मत से बहरा मन्द है, **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه भी ऐसे ही सहाबी थे कि तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इन की शख़्सिय्यत पर भरपूर ए'तिमाद किया करते थे और कई मुआ़-मलात में इन से मुशा-वरत भी किया करते थे। चुनान्चे,

रुक्ने शूरा :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने नए ख़लीफ़ा के इन्तिख़ाब के लिये **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه समेत दीगर छ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर मुश्तमिल एक "शूरा" बनाई और इर्शाद फ़रमाया : "शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी वफ़ाते ज़ाहिरी तक हमेशा इन से ख़ुश रहे, अगर येह शूरा **ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर ले तो ठीक वरना जो भी ख़लीफ़ा बने वोह अपने मा'मूलात में इन से रहनुमाई ज़रूर लेता रहे।"[1]

आप के फ़ैसले पर अ़मल का हुक्म :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़

[1] ......تاریخ مدینۃ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ۲۰، ص ۳۵۴

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जरीर और मुसन्ना बिन हारिसा के माबैन हुकूमती मुआ-मलात में कुछ इख़्तिलाफ़ात हो गए तो अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के मुआ-मलात सुलझाने के लिये वहां भेजा और साथ ही उन दोनों को येह हुक्म जारी किया कि वोह **हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बात ग़ौर से सुनें और येह जो फ़ैसला फ़रमाएं उस पर अमल करें । चुनान्चे दोनों ने ऐसा ही किया ।[1]

आप की सदाक़त की गवाही :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मोज़ों पर मस्ह फ़रमाया ।

हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने आप से येह हदीस सुन कर अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि "क्या येह बात बिल्कुल सहीह है ?" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : **"हां ! और जब सा'द तुम्हें नबिय्ये करीम** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की कोई हदीस सुनाएं तो उस की तस्दीक़ के लिये किसी और से पूछने की ज़रूरत नहीं ।"**[2]

हुक़ूक़ुल इबाद के मुआ-मले में एहतियात :

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़

---

[1]......تاریخ مدینۃ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ۲۰، ص ۳۵۱

[2]......صحیح البخاری، کتاب الوضوء، باب المسح علی الخفین، الحدیث: ۲۰۲، ج ۱، ص ۹۲

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मा'दी करब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत और किरदार के मु-तअ़ल्लिक़ उन की राय त़लब की तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''वोह तो निहायत ही आ'ला सिफ़ात के ह़ामिल हैं, क़र्ज़ व ख़राज वग़ैरा वुसूल करने में कभी सख़्ती से काम न लिया बल्कि हमेशा नरमी इख़्तियार की, ह़ालां कि तेज़ी और होशियारी में वोह चीते की खाल में लिपटे एक ख़ालिस अ़-रबी हैं और बहादुरी में तो शेर की मिस्ल हैं, फ़ैसला करने में कभी ग़-लती न की बल्कि हमेशा इन्साफ़ फ़रमाया और तक़्सीम के मुआ़-मले में कभी किसी का ह़क़ तलफ़ नहीं किया बल्कि हमेशा मुसावात से काम लिया। नीज़ हमारे हुक़ूक़ के मुआ़-मले में वोह च्यूंटियों की त़रह़ ज़िम्मेदारी से काम लेते हैं।''[1]

ह़दीस बयान करने में एह़तियात़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत वाक़ेई ऐसी थी कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इन पर आंखें बन्द कर के ए'तिमाद करते थे, लेकिन इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एह़तियात़ का दामन कभी न छोड़ते थे, बिल ख़ुसूस सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़दीस बयान करने के मुआ़-मले में इन्तिहाई एह़तियात़ फ़रमाते। चुनान्चे,

एक ही ह़दीस बयान फ़रमाई :

ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

[1]......المجالسة وجواهر العلم، الجزء الرابع عشر، الحديث: ٢٠٢٠، ج ٢، ص ٢٦٥

''मैं ने मदीनए मुनव्वरह से मक्कए मुकर्रमा तक **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ सफ़र किया'' और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''मैं काफ़ी अ़र्से तक **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ रहा लेकिन ह़दीस बयान करने में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एह़तियात़ का येह आ़लम था कि इतने अ़र्से में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़क़त़ **एक ही ह़दीस बयान फ़रमाई ।**''[1]

मस्अला पूछने पर सुकूत :

ह़ज़रते आ़इशा बिन्ते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरे वालिदे गिरामी **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कोई मस्अला पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कोई ख़ात़िर ख़्वाह जवाब न दिया बल्कि इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे इस बात का अन्देशा है कि मैं तुम्हें एक ह़दीस बयान करूंगा मगर तुम इज़ाफ़ा कर के उस से कई ह़दीसें बना लोगे ।''[2]

लम्ह़ए फ़िक्रिय्या :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बहुत नाज़ुक मुआ़-मला है, आज कल क़ुरआनी आयात के तराजिम और अह़ादीस बयान करने में भी बहुत बे एह़तियाती की जाती है, बिल ख़ुसूस मोबाइल के ज़रीए ऐसे दीनी मवाद को किसी सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा आ़लिम या दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत की तस्दीक़ के बिग़ैर आगे भेज दिया जाता है । याद रखिये ! क़ुरआने पाक की किसी आयत का ग़लत़ तरजमा

[1]……تاریخ مدینہ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ۲۰ ص ۳۶۱

[2]……الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ذکر جمع النبي صلی اللہ علیہ وسلم لسعد أبویہ بالفداء، ج ۳، ص ۱۰۶

या किसी ऐसी बात को जो ह़दीस न हो उसे सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब कर के जान बूझ कर बत़ौरे ह़दीस बयान करना गुनाहे कबीरा ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। ऐसे शख़्स के लिये खुद सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जहन्नम की वईद इर्शाद फ़रमाई। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने जान बूझ कर मुझ पर झूट बांधा उसे चाहिये कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"[1]

जब **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अह़ादीसे मुबा-रका सुनने के बा वुजूद इतनी एह़तियात़ फ़रमाते थे, तो हमें भी इस मुआ़-मले में बहुत एह़तियात़ करनी चाहिये।

बेशक मैं जन्नती हूं :

हज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि वक़्ते अख़ीर मेरे वालिदे माजिद या'नी **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का सरे अक़्दस मेरी गोद में था, मेरी आंखों से बहते आंसू देख कर उन्हों ने मुझ से पूछा : "ऐ मेरे बेटे! तुझे किस चीज़ ने रुलाया?" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ालत देख कर आबदीदा हो गया था कि आप जैसा फ़ातेह़े ईरान, मर्दे मैदान आज इस गोशा नशीनी व सा-दगी के आ़लम में बिस्तरे मर्ग पर जां बलब है, बस येही सोच कर मेरी कुव्वते बरदाश्त जवाब दे

[1]......صحیح البخاری، کتاب العلم، باب اثم من کذب... الخ، الحدیث: ۱۱۰، ج ۱، ص ۵۷

गई और आंसू बह पड़े ।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : **"आंसू मत बहाओ ! क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे कभी भी अ़ज़ाब नहीं देगा और बेशक मैं जन्नती हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यक़ीनन मुअमिनीन को उन नेकियों का बदला अ़ता फ़रमाएगा जो इन्हों ने ख़ालिस उस की रिज़ा के हुसूल के लिये कीं ।"**[1]

सुन्नतों से वालिहाना महब्बत :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर हर सुन्नत को दिलो जान से अपनाते थे । आज हमारी अक्सरिय्यत सुन्नतों से कोसों दूर है और अगर बा'ज़ लोगों को म-दनी माहोल की ब-र-कत से सुन्नतें अपनाने का जज़्बा मिलता भी है तो उ़मूमन नफ़्स पर गिरां गुज़रने वाली सुन्नतें जैसे कम और सादा खाना, सादा लिबास पहनना वग़ैरा से वोह भी महरूम रह जाते हैं । ऐ काश ! हमें प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों से वालिहाना महब्बत हो जाए और बस येही ज़बां पर जारी हो जाए :

शहा ऐसा जज़्बा पाऊं कि मैं ख़ूब सीख जाऊं
तेरी सुन्नतें सिखाना म-दनी मदीने वाले
तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह जब निकल कर
चले तू गले लगाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुश बख़्ती और बद बख़्ती वाली तीन तीन चीज़ें :

हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ शैबानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत

[1] ......الطبقات الكبرى لابن سعد، ذكر وصية سعد، ج ٣، ص ١٠٨

करते हैं कि **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन चीज़ें ख़ुश बख़्ती हैं और तीन बद बख़्ती।"

ख़ुश बख़्ती वाली तीन चीज़ें येह हैं : **(1)** इताअ़त गुज़ार नेक बीवी **(2)** ऐसी सुवारी जो नेक साथियों के पास बर वक़्त पहुंचा दे **(3)** और ऐसा वसीअ़ घर जो ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी के कसीर वसाइल से आरास्ता हो।

जब कि बद बख़्ती वाली तीन चीज़ें येह हैं : **(1)** बद अख़्लाक़ ना फ़रमान बीवी **(2)** ऐसी सुवारी जो ब वक़्ते ज़रूरत नेक साथियों से मिलाने के बजाए थका दे और अगर उसे छोड़ दिया जाए तो पीछे रह जाए **(3)** और ऐसा तंग व छोटा घर जिस में ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी के क़लील वसाइल हों।[1]

इख़्तिलाफ़ात से कनारा कशी :

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द जब सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के माबैन बा'ज़ उमूर में इख़्तिलाफ़ात शिद्दत इख़्तियार कर गए तो **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम इख़्तिलाफ़ात से कनारा कशी इख़्तियार करते हुए घर के एक कोने में गोशा नशीन हो गए और घर वालों से फ़रमा दिया कि "मुझे लोगों के मा'मूलात के मु-तअ़ल्लिक़ उस वक़्त तक कुछ न बताना जब तक वोह एक इमाम की बैअ़त पर मुत्तफ़िक़ न हो जाएं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहिब ज़ादे उ़मर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पास हाज़िर हुए और अ़र्ज़

[1] ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب اصلاح المال، باب العقارات، الحدیث: ۲۹۲، ج۷، ص۴۶۷

की : "आप यहां तशरीफ़ फ़रमा हैं जब कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ख़िलाफ़त के मुआ-मले में इख़्तिलाफ़ का शिकार हो गए हैं।" और एक रिवायत में है कि आप के भतीजे हज़रते सय्यिदुना हाशिम बिन उत्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पास आए और अर्ज़ की : "वहां एक लाख तलवारें ख़िलाफ़त के मुआ-मले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ैसले की मुन्तज़िर हैं और आप यहां तशरीफ़ फ़रमा हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : **"तुम मुझे ऐसी तलवार ला दो जिस से अगर मैं मुसल्मान को मारूं तो उसे कोई नुक़्सान न पहुंचाए और अगर काफ़िर को मारूं तो उसे काट डाले।"**[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का पसन्दीदा बन्दा :

उन्ही दिनों की बात है कि एक दिन **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ऊंटों के पास मौजूद थे कि इतने में आप का बेटा उ़मर बिन सा'द दूर से आता हुवा दिखाई दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे को देख कर फ़रमाया : "मैं इस सुवार के शर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं।" (क्यूं कि वोह आप को गोशा नशीनी तर्क करने और उमूरे ख़िलाफ़त में दिलचस्पी लेने के लिये उभारा करता था) चुनान्चे बेटे ने क़रीब आ कर शिक्वा भरे लहजे में अर्ज़ की : "आप तो ऊंटों और बकरियों वग़ैरा में लगे रहते हैं और लोगों को सल्तनत के मुआ-मले में झगड़ने के लिये छोड़ दिया है उन के पास जाते ही नहीं।" **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के सीने पर हाथ मार कर फ़रमाया :

[1]......تاریخ مدینۃ دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ۲۰، ص ۲۸۷

"ख़ामोश हो जाओ ! मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने उस बन्दे से महब्बत रखता है जो मुत्तक़ी या'नी परहेज़ गार और रब عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला हो, मुस्तग़नी या'नी लोगों से बे परवाह हो और अपने गिर्द लोगों की रैल पैल की ख़्वाहिश रखने वाला न हो बल्कि गोशा नशीन हो ।"[1]

मख़्लूक़ से कनारा कशी :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इर्शाद फ़रमाया करते : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं येह पसन्द करता हूं कि मेरे और लोगों के दरमियान लोहे का एक दरवाज़ा हो, न मुझ से कोई बात करे और न ही मैं किसी से बात करूं यहां तक कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जा मिलूं ।"[2]

अन्सार से वालिहाना महब्बत :

हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं मैं ने अपने वालिदे गिरामी **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : "अब्बाजान ! आप ने अन्सार के महल्ले में घर बनाया है, इस की कोई ख़ास वज्ह ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब देने के बजाए मुझ से पूछ लिया कि "क्या तुम्हारे दिल में कोई शुबा है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं, बल्कि मैं तो वैसे ही पूछ रहा था ।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्सार के फ़ज़ाइल बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाने लगे : "मैं ने मोहसिने काएनात, फ़ख़्रे

---

[1]......صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقائق، الحدیث: ۲۹۶۵، ص ۱۵۸۵

[2]......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب العزلة والإنفراد، الحدیث: ۵۷، ج ۶، ص ۵۱۱

मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना है कि ''अन्सार से वोही महब्बत करेगा जो मोमिन है और इन से वोही बुग़्ज़ रखेगा जो मुनाफ़िक़ है।''[1]

तरबिय्यते औलाद :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे अपने वालिदे गिरामी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इल्मी व अ़-मली फ़ैज़ान से सैराब होते रहते थे और ख़ुद **हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी इन की तरबिय्यत फ़रमाते रहते थे। चुनान्चे,

मांगना है तो क़नाअ़त मांग :

एक मर्तबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने एक बेटे को नसीहत करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तू किसी से कुछ मांगना चाहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से क़नाअ़त मांग कि माल जितना भी हो क़नाअ़त न होने की सूरत में वोह तुझे ग़नी नहीं कर सकता।''[2]

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी अहादीस

एक दिन में एक हज़ार नेकियां :

नूर के पैकर, तमाम नबियों कि सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम में से कोई एक दिन में एक हज़ार नेकियां कमा ले ?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह कैसे मुम्किन है ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''**जो दिन में सो बार अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की**

[1]......اسدالغابة، الرقم ۲۰۳۸ سعدبن مالک القرشی، ج ۲، ص ۴۳۶

[2]......المجالسة وجواهر العلم، الجزء الثامن، الحديث: ۱۱۱۰، ج ۱، ص ۴۲۷

तस्बीह़ करे उस के नामए आ'माल में एक हज़ार नेकियां लिख दी जाती हैं और उस की उतनी ही ख़ताएं मिटा दि जाती हैं।''[1]

जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे मुसल्ले (या'नी नमाज़ पढ़ने की जगह) और घर के दरमियान का टुकड़ा **जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।**''[2]

जादू और ज़ह्‌र से मह़फ़ूज़ रहने का नुस्ख़ए कीमिया :

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो सुब्ह़ के वक़्त रोज़ाना सात अ़ज्वा खजूरें खा लिया करे तो उस दिन कोई ज़ह्‌र और जादू उसे तक्लीफ़ न देगा।[3]

कातिबीने वह़्य :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जो कुरआने करीम की नाज़िल होने वाली आयतों और दूसरी ख़ास ख़ास तह़रीरों को **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म के मुताबिक़ लिखा करते थे। चुनान्चे,

इमाम क़स्तलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی (मु-तवफ़्फ़ा 923 हि.) ने **अल मवाहिबुल्लदुन्निय्यह** में उन कातिबीन के अस्माए गिरामी ज़िक्र किये हैं जो येह हैं :

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (2) हज़रते सय्यिदुना उ़मर

---

[1]......المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۱۴۹۶، ج ۱، ص ۳۶۸

[2]......المعجم الکبیر، الحدیث: ۳۳۲، ج ۱، ص ۱۴۷

[3]......صحیح البخاری، کتاب الاطعمة، باب العجوة، الحدیث: ۵۴۴۵، ج ۳، ص ۵۴۰

फ़ारूक़ (3) हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (4) हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (5) हज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** (6) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम (7) ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़स (8) **ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास** (9) ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा (10) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अरक़म (11) ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब (12) ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन क़ैस (13) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़न्ज़ला बिन रबीअ़ (14) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान (15) ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया (16) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित (17) ह़ज़रते सय्यिदुना शुरह़्बील बिन ह़-सना (18) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़्रमी (19) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद (20) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स (21) ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरह बिन शो'बा (22) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा (23) ह़ज़रते सय्यिदुना मुअ़य-क़ीब बिन अबी फ़ातिमा (24) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद बिन आ़स (25) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान (26) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुवय-तिब

رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن[1]

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अज़्वाज व औलाद :

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ अवक़ात में कुल ग्यारह निकाह़ फ़रमाए, उन से आप की औलाद की ता'दाद 36 है, जिन में से 18 बेटे और 18 बेटियां हैं। अज़्वाज और उन से पैदा होने वाली औलाद की तफ़्सील कुछ यूं है :

[1] ......المواهب اللدنيه، الفصل السادس، ج ۱، ص ۴۳۴

	अज़्वाज	बेटे	बेटियां	कुल ता'दाद
1	बिन्ते शिहाब	इस्हाक़ अक्बर	उम्मे ह़कम कुब्रा	2
2	बिन्ते क़ैस बिन मा'दी करब	उ़मर, मुह़म्मद	ह़फ़्सा, उम्मे क़ासिम, कुल्सूम	5
3	उम्मे आ़मिर बिन्ते अ़म्र	आ़मिर, इस्माईल, इस्ह़ाक़ असग़र	उम्मे इ़मरान	4
4	ज़ुबैदा	इब्राहीम, मूसा	उम्मे ह़कम सुग़रा, उम्मे अ़म्र, हिन्द, उम्मे ज़ुबैर, उम्मे मूसा	7
5	सलमा	**अ़ब्दुल्लाह**	....	1
6	ख़ौला बिन्ते अ़म्र	मुस्अ़ब	....	1
7	उम्मे हिलाल बिन्ते रबीअ़ बिन मरी	**अ़ब्दुल्लाह** असग़र, अ़ब्दुर्रह़मान(बुजैर)	ह़मीदा	3
8	उम्मे ह़कीम बिन्ते क़ारिज़	उ़मैर अक्बर	ह़म्ना	2
9	सलमा बिन्ते ह़फ़्स	उ़मैर असग़र, अ़म्र, इ़मरान	उम्मे उ़मर, उम्मे अय्यूब,उम्मे इस्ह़ाक़	6
10	ज़ब्या बिन्ते आ़मिर	सालेह़	....	1
11	उम्मे हुजैर	उ़स्मान	रम्ला	2

.....	.....	.....	अ़म्रह	1
.....	.....	.....	आ़इशा	1
कुल ता'दाद	**अज़्वाज = 11**	**बेटे = 18**	**बेटियां = 18**	36

आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ की बेटी **अ़म्रह** नाबीना थीं जिन की वालिदा अ़रब के क़ैदियों में से थीं और ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رضی اللہ تعالیٰ عنہا का कुतुब में अक्सर ज़िक्र मिलता है (मगर इन की वालिदा के मु-तअ़ल्लिक़ किसी ने कुछ ज़िक्र नहीं किया) और इन्हों ने आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ से कई अह़ादीस भी रिवायत की हैं ।[1]

विसाले पुर मलाल :

आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ का विसाले पुर मलाल 58 सिने हिजरी को ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رضی اللہ تعالیٰ عنہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में "वादिये अ़क़ीक़" में हुवा जो कि मदीनए मुनव्वरह से तक़रीबन दस मील की दूरी पर वाक़ेअ़ है, आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ का ज-सदे मुबारक कन्धों पर उठा कर मदीनए मुनव्वरह लाया गया । वालिये मदीना मरवान बिन ह़कम ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ने अपने अपने हुजरों में आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ की नमाज़े जनाज़ा अदा की ।[2]

सब से आख़िर में इन्तिक़ाल :

मुहाजिरीन सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में सब से आख़िर में

[1]......صفة الصفوة، ابو اسحق سعد بن ابی وقاص، ذکر اولاده، ج ۱، الجزء الاول، ص ۱۸۷

[2]......الرياض النضرة، ج ۲، ص ۳۳۳

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हुवा ।[1] जिस साल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हुवा उसी साल उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का भी इन्तिक़ाल हुवा ।[2]

तर्का :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की साहि़ब ज़ादी ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा बिन्ते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरे वालिदे गिरामी ने मरवान को अपने माल की ज़कात पांच हज़ार दिरहम भेजी और जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा तो तर्के में आप ने दो लाख और पचास हज़ार दिरहम छोड़े ।[3]

इश्क़ से मा'मूर वसिय्यत :

इन्तिक़ाल से क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इश्क़ से मा'मूर येह वसिय्यत फ़रमाई कि मुझे उस जुब्बे में कफ़न दिया जाए जिसे पहन कर मैं ने जंगे बद्र में मुश्रिकीन से जिहाद किया था, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वसिय्यत के मुताबिक़ आप को उसी जुब्बा शरीफ़ में

---

[1]……المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفة الصحابة، ذکر مناقب ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ٦١٥٦، ج٤، ص ٦٣١

[2]……تاریخ مدینة دمشق، سعد بن مالک ابی وقاص، ج ٢٠، ص ٣٧١

[3]……المرجع السابق، ص ٣٦٣

कफ़न दिया गया और ता क़ियामत आराम फ़रमाने के लिये जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न कर दिया गया ।[1]

बग़ली क़ब्र खोदने की वसिय्यत :

हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सा'द इब्ने अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने अपने म-रज़े वफ़ात में फ़रमाया : ''मेरे लिये बग़ली क़ब्र खोदना और मुझ पर कच्ची ईंटें यूंही खड़ी करना जैसे **रसूलुल्लाह** صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم के लिये की गई ।''[2]

बग़ली क़ब्र किसे कहते हैं ?

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ رحمۃ الحنان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि **बग़ली क़ब्र** येह है कि अव्वलन ज़मीन सीधी खोदी जाए फिर क़िब्ले की जानिब मय्यित के जिस्म के मुत़ाबिक़ गढ़ा किया जाए और येह जो दरवाज़ा सा बन गया उसे ईंटों या पथ्थरों से बन्द कर दिया जाए यहां पक्की ईंट या लकड़ी लगाना मक्रूह है कि इन में आग का असर है, नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم की क़ब्रे अन्वर में नव कच्ची ईंटें लगाई गई क्यूं कि मदीनए मुनव्वरह की ईंट बहुत बड़ी होती है, हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم की क़ब्रे अन्वर ज़मीन से एक बालिश्त ऊंची रखी गई ।[3]

---

[1]......الرياض النضرة، ج ۲، ص ۳۶۴

[2]......صحيح مسلم، كتاب الجنائز، باب في اللحد ونصب اللبن على الميت، الحديث: ۹۶۶، ص ۴۸۱

[1]...... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 487

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ماخذ ومراجع

نمبرشمار	نام کتاب	مؤلف/مصنف	مطبوعات
1	القران الكريم	كلام الٰہی	مكتبة المدينه، كراچی
2	كنزالايمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان متوفی ۱۳۴۰ھ	مكتبة المدينه، كراچی
3	معالم التنزيل (تفسير البغوی)	امام ابومحمد حسين بن مسعود بغوی متوفی ۵۱۶ھ	دارالكتب العلمية، بيروت
4	صحيح البخاری	امام ابوعبدالله محمد بن اسماعيل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دارالكتب العلمية، بيروت
5	صحيح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشيری متوفی ۲۶۱ھ	دارابن حزم، بيروت
6	سنن الترمذی	امام ابوعيسیٰ محمد بن عيسیٰ ترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دارالمعرفه، بيروت
7	المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ	دارالفكر، بيروت
8	المستدرک علی الصحيحين	امام ابوعبدالله محمد بن عبدالله حاكم نيشاپوری متوفی ۴۰۵ھ	دارالمعرفه، بيروت
9	المعجم الكبير	امام ابو القاسم سليمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار احياء التراث العربی، بيروت
10	الموسوعة	حافظ ابو بكر عبدالله بن محمد بن عبيد ابن ابی الدنيا متوفی ۲۸۱ھ	المكتبة العصرية
11	مجمع الزوائد	حافظ نورالدين علی بن ابی بكر ہيتمی متوفی ۸۰۷ھ	دارالفكر، بيروت
12	الفردوس بمأثور الخطاب	حافظ ابو شجاع شيرويه بن شهردار بن شيرويه ديلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دارالفكر، بيروت
13	كنزالعمال	علامه علی متقی بن حسام الدين هندی برهان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دارالكتب العلمية، بيروت
14	المجالسة وجواهر العلم	ابوبكر احمد بن مروان الدينوری مالكی متوفی ۳۳۳ھ	دارالكتب العلمية، بيروت
15	عمدة القاری	امام بدر الدين ابو محمد محمود بن احمد عينی متوفی ۸۵۵ھ	دارالفكر، بيروت
16	فيض القدير	علامه محمد عبدالرؤف مناوی متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالكتب العلمية، بيروت

17	مرأة المناجيح	حكيم الامت مفتی احمد يار خان نعيمی متوفی ١٣٩١ھ	ضياء القرآن پبليكيشنز
18	دلائل النبوة	امام احمد بن حسين بن علی بيهقی متوفی ٤٥٨ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
19	المواهب اللدنيه	شهاب الدين احمد بن محمد قسطلانی متوفی ٩٢٣ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
20	مكارم الاخلاق	حافظ ابو بكر عبد الله بن محمد بن عبيد ابن ابی الدنيا متوفی ٢٨١ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
21	حلية الاولياء	حافظ ابو نعيم احمد بن عبد الله شافعی متوفی ٤٣٠ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
22	الطبقات الكبرىٰ	محمد بن سعد بن منيع هاشمی بصری متوفی ٢٣٠ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
23	كتاب المغازی	ابو عبد الله محمد بن عمر بن واقدی متوفی ٢٠٧ھ	مؤسسة الاعلمی للمطبوعات، بيروت
24	الكامل فی التاريخ	ابو الحسن علی بن محمد بن الاثير الجزري متوفی ٦٣٠ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
25	وفيات الاعيان	ابو العباس شمس الدين احمد بن محمد بن ابي بكر بن خلكان متوفی ٦٨١ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
26	معرفة الصحابة	حافظ ابو نعيم احمد بن عبد الله شافعی متوفی ٤٣٠ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
27	الاصابة فی تمييز الصحابة	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی شافعی متوفی ٨٥٢ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
28	اسد الغابة	ابو الحسن علي بن محمد بن الاثير الجزري متوفی ٦٣٠ھ	دار احياء التراث العربی، بيروت
29	الرياض النضرة	ابو العباس محب الدين احمد بن عبد الله بن محمد الطبري شافعی متوفی ٦٩٤ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
30	تاريخ مدينة دمشق	الحافظ ابو القاسم علي بن حسن بن هبة الله الشافعي المعروف ابن عساكر متوفی ٥٧١ھ	دار الفكر بيروت
31	صفة الصفوة	امام جمال الدين ابی الفرج ابن جوزی متوفی ٥٩٧ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
32	سبل الهدی والرشاد	محمد بن يوسف صالحی شامی متوفی ٩٤٢ھ	دار الكتب العلمية، بيروت
33	الفتاوی الهندية	علامه همام مولانا شيخ نظام حنفی متوفی ١١٦١ھ وجماعة من علماء الهند	دار الفكر بيروت
34	فتاویٰ رضويه	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان حنفی متوفی ١٣٤٠ھ	رضا فاؤنڈيشن، لاهور
35	بهار شريعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی حنفی متوفی ١٣٦٧ھ	مكتبة المدينه، كراچی
36	جنتی زيور	عبد المصطفےٰ اعظمی متوفی ١٤٠٦ھ	مكتبة المدينه، كراچی
37	فيضانِ سنت	ابو بلال محمد الياس عطار قادری رضوی	مكتبة المدينه، كراچی

फ़ेहरिस्त







اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net